Issue 12
July 2022
www.rgfindia.org

RAJIV GANDHI FOUNDATION

Sadbhavana DIGEST

Uttarakhand Special

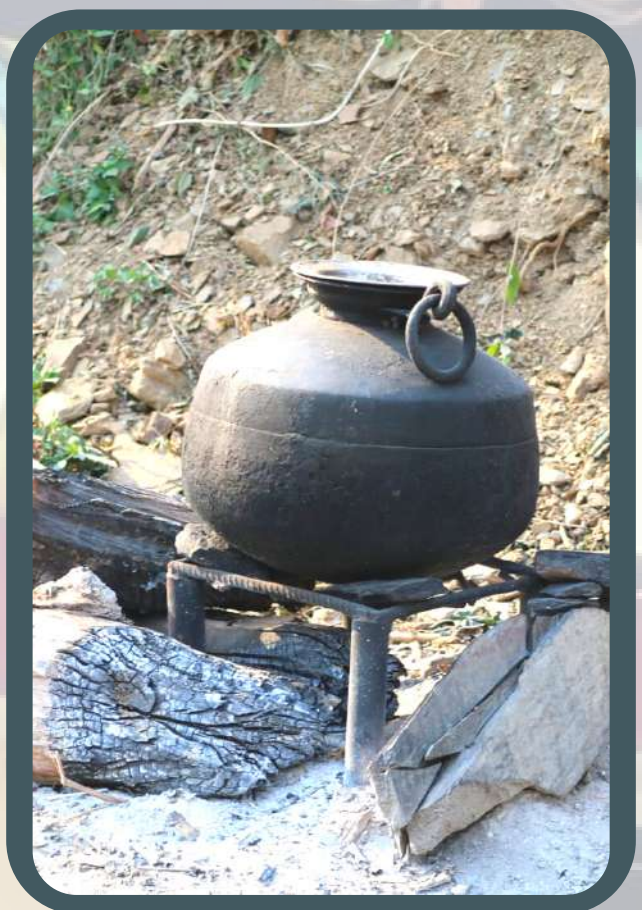

Sadbhavana Digest

Issue #12, July 2022

Contents

सम्पादकीय.....3

1 राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा, उत्तराखंड- रिपोर्ट | भुवन पाठक.....4

2 Part I: How to deal with the self?.....19

2.1 अधिकार : महादेवी वर्मा.....19

2.2 Sri Dev Suman: The Hero of Garhwal.....20

2.3 चन्द्र सिंह गढ़वाली.....23

2.4 Sarla Behn– The Comrade of Gandhi, Social Reformer, and an Ardent Environmentalist By Bharat Dogra.....28

3 **Part II: How to deal with the others?**.....32

3.1 केदार सिंह कुंजवाल : बादलों की गोद से.....32

3.2 Coolie Begar and Forest Dissent.....34

3.3 राम सिंह धौनी.....37

3.4 सांझे चूल्हे में एक सामाजिक क्रांति.....38

4 Part III: How to deal with Nature?.....41

4.1 आज हिमाल तुमन के धत्यूंछौ: गिरीश तिवारी "गिर्दा".....41

4.2 चन्द्र कुंवर बर्त्वाल- हिंदी के कालिदास.....43

4.3 Reviving the spiritual roots of agriculture for sustainability in farming and food systems, Bisht and Rana.....45

4.4 एक लोकनदी- केदारखंड में गंगा.....49

5 Epilogue.....53

5.1 गंगा हिमालय.....53

5.2 Veteran conservationist and Ganga crusader, Swami Gyanswaroop Sanand dies during fast-unto-death to save Ganga.....55

सम्पादकीय

समाज में बढ़ते हुए भेदभाव, द्वेष, घृणा, यहां तक कि परस्पर अमानवीय व्यवहार का सामना करने के लिए कुछ सामाजिक विचारकों एवं जन कार्यकर्ताओं द्वारा देश की आजादी के 75वें साल के मौके पर एक राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा की परिकल्पना की गई। इसकी शुरुआत देवभूमि उत्तराखंड से मई महीने में की गई।

उत्तराखंड में ऐतिहासिक कुली बेगार प्रथा के 100वें वर्ष के मौके पर उत्तराखंड के विभिन्न सामाजिक सस्थानों, लोकतांत्रिक संगठनों, जन आंदोलन समूहों, नागरिक सगठनों और बौद्धिक संस्थाओं द्वारा एक साथ जुड़ कर इस प्रदेश व्यापी यात्रा का आयोजन किया गया।

यात्रा के संचालन एवं प्रबंधन सम्बंधी निर्णयों के लिए एक प्रदेश स्तरीय कमेटी का गठन किया गया। विभिन्न संगठनों, लोक समूहों एवं सामाजिक संस्थानों ने यात्रा संबंधी जिम्मेदारियां ली।

सात सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पूरी यात्रा में शामिल रहने का निर्णय लिया। यह सात हैं सर्वश्री इस्लाम हुसैन, भुवन पाठक, बसंती बहन, साहिब सिंह सजवाल, गोपाल राम, सुन्दर बरोलिया, एवं प्रयाग भट्ट। इनके अलावा, हर पड़ाव पर बहुत सारे साथी एक से सात दिन तक यात्रा के साथ जुड़े।

यह यात्रा उत्तराखंड की जनता के साथ पर्यावरणीय, लोकतांत्रिक, सामाजिक सौहार्द्र, आजीविका, एवं पलायन जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर लोक संवाद स्थापित करने की कोशिश है। यात्रा के दौरान विगत 100 सालों के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक एवं लोकपक्षीय राजनीति के स्थानीय नायकों के जीवन एवं उनके योगदान को भावी पीढ़ी के साथ साझा करने का प्रयास किया गया।

स्थानीय विकास एवं समाज सुधार के उत्तम प्रयासों को श्रद्धा पूर्वक याद किया गया। साथ ही साथ, युवाओं की आकांक्षाओं एवं शंकाओं के बारे में उनसे संवाद किया गया। अंतरराष्ट्रीय, देशीय, एवं स्थानीय समस्याओं के कारणों एवं परस्पर संबंधों के बारे में समझ बढ़ाई गई।

सद्भावना यात्रा 8 मई से उत्तराखंड के हल्द्वानी नगर से आरंभ हुई। नगरों, कस्बों, एवं गांवों में पैदल तथा इनके बीच बजाज टेम्पो ट्रैवलर मिनीबस द्वारा यह यात्रा कुल चालीस दिन में यह पूरे प्रदेश के हर कोने को छुई तथा पांच दिन उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में अलग अलग स्थानों पर पहुंची । इस यात्रा का समापन समारोह देहरादून में 20 -21 जून 2022 को हुआ जिसमे राज्य भर से लगभग १०० सामाजिक कार्यकर्ता जुड़े| हमारी सद्भावना डाइजेस्ट का ये अंक, उत्तराखंड के सभी साथियों के सहयोग से तैयार हुआ है, और उत्तराखंड के इतिहास, संस्कृति, और सद्भावना को समर्पित है।

1 राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा, उत्तराखंड- रिपोर्ट

भुवन पाठक

1.1 यात्रा का सन्दर्भ एवं उद्देश्य

समाज में बढ़ते हुए भेदभाव, द्वेष, घृणा, यहां तक कि परस्पर अमानवीय व्यवहार का सामना करने के लिए कुछ सामाजिक विचारकों एवं जन कार्यकर्ताओं द्वारा देश की आजादी के 75वें साल के मौके पर एक राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा की परिकल्पना की गई। इसकी शुरुआत देवभूमि उत्तराखंड से मई महीने में की गई।

उत्तराखंड में ऐतिहासिक कुली बेगार प्रथा के 100वें वर्ष के मौके पर उत्तराखंड के विभिन्न सामाजिक सस्थानों, लोकतांत्रिक संगठनों, जन आंदोलन समूहों, नागरिक सगठनों और बौद्धिक संस्थाओं द्वारा एक साथ जुड़ कर इस प्रदेश व्यापी यात्रा का आयोजन किया गया।

यात्रा के संचालन एवं प्रबंधन सम्बंधी निर्णयों के लिए एक प्रदेश स्तरीय कमेटी का गठन किया गया। विभिन्न संगठनों, लोक समूहों एवं सामाजिक संस्थानों ने यात्रा संबंधी जिम्मेदारियां ली।

सात सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पूरी यात्रा में शामिल रहने का निर्णय लिया। यह सात हैं सर्वश्री इस्लाम हुसैन, भुवन पाठक, बसंती बहन, साहिब सिंह सजवाल, गोपाल राम, सुन्दर बरोलिया, एवं प्रयाग भट्ट एवं बासंती बहन। इनके अलावा, हर पड़ाव पर बहुत सारे साथी एक से सात दिन तक यात्रा के साथ जुड़े।

यह यात्रा उत्तराखंड की जनता के साथ पर्यावरणीय, लोकतांत्रिक, सामाजिक सौहार्द्र, आजीविका, एवं पलायन जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर लोक संवाद स्थापित करने की कोशिश है। यात्रा के दौरान विगत 100 सालों के सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं लोकपक्षीय राजनीति के स्थानीय नायकों के जीवन एवं उनके योगदान को भावी पीढ़ी के साथ साझा करने का प्रयास किया गया।

स्थानीय विकास एवं समाज सुधार के उत्तम प्रयासों को श्रद्धा पूर्वक याद किया गया। साथ ही साथ, युवाओं की आकांक्षाओं एवं शंकाओं के बारे में उनसे संवाद किया गया। अंतरराष्ट्रीय, देशीय, एवं स्थानीय समस्याओं के कारणों एवं परस्पर संबंधों के बारे में समझ बढ़ाई गई।

सद्भावना यात्रा 8 मई से उत्तराखंड के हल्द्वानी नगर से आरंभ हुई। नगरों, कस्बों, एवं गांवों में पैदल तथा इनके बीच बजाज टेम्पो ट्रैवलर मिनीबस द्वारा यह यात्रा कुल चालीस दिन में यह पूरे प्रदेश के हर कोने को छुई तथा पांच दिन उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में अलग अलग स्थानों पर पहुंची द्य इस यात्रा का समापन समारोह देहरादून में 20 –21 जून 2022 को हुआ जिसमे राज्य भर से लगभग १०० सामाजिक कार्यकर्ता जुड़े।

I.2 यात्रा के स्थानों की सूची

हल्द्वानी से सुरू होकर 45 दिनों में, 4500 किलोमीटर से अधिक यात्रा, 200 से अधिक सद्भावना सभाओं एव कार्यक्मों में लगभग 10,000 लोगों ने भाग लिया एवं उनसे संवाद किया गया।

क्रम	यात्रा स्थल	क्रम	यात्रा स्थल	क्रम	यात्रा स्थल
1	हल्द्वानी	28	चौरा	55	बूढा केदार
2	दिनेशपुर	29	कपकोट भराडी	56	विनक खाल
3	रामनगर	30	बागेश्वर	57	उत्तरकाशी
4	नैनीताल	31	कौसानी अनाशक्ति आश्रम	58	टिहरी बांध क्षेत्र
5	मल्ला रामगढ़	32	कौसानी लक्ष्मी आश्रम	59	नई टिहरी
6	तल्ला रामगढ़	33	चनौदा	60	चम्बा
7	नथुवाखान	34	अल्मोड़ा	61	जौल गांव
8	छतोला	35	कठपुडिया	62	खाड़ी
9	सतखोल	36	द्वारसों	63	गैड गांव जौनपूर
10	मुक्तेश्वर	37	मजखली	64	गरखत
11	भटोलिया बाजार	38	रानीखेत	65	नौगांव
12	जैंती	39	द्वाराहाट	66	चकराता
13	कांडे गांव	40	गैरसैंण	67	कालसी
14	दाड्मी गांव	41	नांगनुलाखाल	68	विकासनगर
15	दन्या लक्ष्मी आश्रम	42	चिंतोली	69	रामपुर
16	दन्या बाजार	43	खंडुआ	70	कोटद्वार
17	पिथौरागढ़	44	देघाट	71	लैंसडोन
18	हुडती गांव	45	सल्ट खुमाड़	72	सतपुली
19	अस्कोट	46	देवालय सल्ट	73	पोखाल
20	जोलजीवी	47	थलीसैंण	74	वीसी (द्वावाटीखाल)
21	मुन्स्यारी	48	पोडी गढ़वाल	75	विनक
22	नाचनी	49	श्रीनगर	76	अठूरवाला
23	मुवानी पीपलतड	50	सित्यारा आश्रम (बालगंगा घाटी)	77	कोटी
24	बोगाड़ नाघर आश्रम	51	बेलेसवर धाम	78	डोईवाला
25	हिमदर्शन कुटी	52	लस्याल गांव	79	दूधली
26	गौंखुरी	53	विनकखाल	80	**देहरादून (यात्रा समापन)**
27	रीमा	54	खवाडा गांव		

यात्रा की योजना–प्रेरणा के लिए राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली का आभार। जिन जिन साथियों ने आवास, भोजन व बैठकों का आयोजन किया, उनको धन्यवाद।

हल्द्वानी से उत्तराखंड सद्भावना यात्रा शुरू

हल्द्वानी, संवाददाता। हल्द्वानी से उत्तराखंड सद्भावना यात्रा शुरू हो चुकी है। रविवार को रामपुर रोड स्थित रेस्टोरेंट में हुई गोष्ठी के बाद यात्रा को हरी झंडी दिखाकर दिनेशपुर के लिए रवाना किया गया। उत्तराखंड में सामाजिक धार्मिक एकता व समन्वय के लिए यह 40 दिवसीय सद्भावना यात्रा आयोजित की जा रही है।

कुली बेगार प्रथा के 100वें एवं देश की आजादी के 75वें साल के मौके पर आयोजित यात्रा में विभिन्न सामाजिक संस्थान, लोकतांत्रिक संगठन, जन आंदोलन समूह, नागरिक संगठन और बौद्धिक संस्थान सहयोगी हैं। पत्रकार

हल्द्वानी से रविवार को उत्तराखंड सद्भावना यात्रा को दिनेशपुर के लिए रवाना किया गया।

स्वर्गीय कुंवर प्रसून के जन्मदिन पर उनकी स्मृति में यह यात्रा शुरू की गई है। गोष्ठी में उत्तराखंड आचार्य कुल के अध्यक्ष विजय शंकर शुक्ला, राज्य आंदोलनकारी पीसी तिवारी, इस्लाम हुसैन, हुकुम सिंह कुंवर, कैलाश पाण्डेय, अरण्य रंजन, बलवंत बोरा, आनन्द रावत, राजीव गांधी फाउंडेशन के अध्यक्ष विजय महाजन, बहादुर सिंह जग्गी, प्रभात ध्यानी आदि रहे।

वैचारिक रूप से यात्रा की योजना बनाने में सहायता के लिए पद्मश्री इतिहासकार डॉ शेखर पाठक, राजीव लोचन साह, पीसी तिवारी, सुरेश भाई, डॉक्टर रमेश पंत, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, दर्शना जोशी, सुंदर सिंह मेहरा, लक्ष्मण आर्य व राजीव गांधी फाउंडेशन के विजय महाजन व वरिष्ठ सद्भावना फेलो विजय प्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यात्रा दल का नेतृत्व उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, रीता इस्लाम, गोपाल भाई, सर्वोदय कार्यकर्ता साहब सिंह सजवान, सुंदर सिंह बरोलिया, विजय महाजन, प्रो सोमनाथ घोष, परमानंद भट्ट, जीत सिंह सनवाल, लक्ष्मी सनवाल, प्रयाग भट्ट, रजनीश बिष्ट, रेवा बिष्ट, हिदायत आजमी, मुरारी गोस्वामी, दिनेश लाल, नरेंद्र कुमार, प्रेम बहुखंडी, पीसी तिवारी, किरण आर्य, अमीनुल रहमान, प्रभात उप्रेती, दिनेश कुंजवाल, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, डॉक्टर रमेश पंत, सुंदर सिंह मेहरा आदि शामिल रहे।

जिन प्रमुख साथियों ने यात्रा पड़ावों पर सहयोग किया उनमें सर्व श्री डॉक्टर अजय पुंडीर, नैन सिंह डगवाल, रूपेश कुमार, प्रभात ध्यानी, मनमोहन अग्रवाल, राजीव लोचन साह, शेखर पाठक, अनिरुद्ध जडेजा, स्वाति मवाली, रमा बिष्ट, बचे सिंह बिष्ट, दिनेश कुंजवाल, अनिला पंत, चंद्रा पंत, महेश पुनेठा, महेंद्र रावत, भगवान रावत, राजेश उप्रेती, रेनू ठाकुर, जगत मतोलिया, नरेश द्विवेदी, अनिल कार्ले, कमलदीप रावत।

1.3 सदभावना यात्रा रिपोर्ट

सदभावना भाईचारा के संदेश के साथ राष्ट्रीय सदभावना यात्रा 8 मई 2022 को हल्द्वानी से प्रारंभ हुई। 8 मई कुंवर प्रसून जी की जयंती होती है। हल्द्वानी से शुरू होकर 20 जून 2022 को यात्रा का समापन देहरादून में हुआ, इस बीच यात्रा में लगभग 4500 किलोमीटर की सड़कें नापी 40 राते उत्तराखंड के अलग–अलग स्थानों पर बिताई, लगभग 200 से अधिक बैठके, नुक्कड़ सभाएं, संस्कृतिक रैलियों, जनसभाओं द्वारा लोगों से संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया।यात्रा की शुरुआत संदेश यात्रा के तौर पर हुई, लेकिन धीरे–धीरे यह यात्रा शोध व अध्ययन यात्रा में बदल गई, जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते गए हमारे सामने उत्तराखंडी जनजीवन के नए अध्याय खुलते चले गए।

कुली बेगार प्रथा के विरुद्ध आंदोलन के 100 वर्ष पूरे होने व आजादी के 75वें साल में अपने लोकनायकों को हम याद करते रहे। पिछले 100 सालों में पहले राष्ट्रीय आंदोलन फिर आजाद भारत के निर्माण में जिन लोकनायकओ ने अपना जीवन खपा दिया उनके कार्यक्षेत्र व जन्मभूमि से भी यह यात्रा गुजरी, कुली बेगार आंदोलन की भूमि बागेश्वर जहाँ गांधी जी का आना एक महत्वपूर्ण घटना साबित हुईद्य उनके आने के बाद राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा रचनात्मक आंदोलन व कार्यों की निरंतरता आज भी उत्तराखंड के अलग–अलग हिस्सों में दिखाई देती है।

1970–80 के दशक तक विभिन्न सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक आंदोलनों तथा कामों में अग्रणीय दिखाई देने वाला गांधीवादी आंदोलन अब कमजोर दिखाई देने लगा है। खादी ग्रामोद्योग का काम करने वाली रचनात्मक सस्थाएं भी नई बाजार व्यवस्था का शिकार हुई है। इसके बावजूद सर्वोदय व भूदान आंदोलन में भागीदारी करने वाली पीढ़ियां तथा उनकी स्मृति अभी शेष है, लोग उन दिनों तथा तब के माहौल को भावुकता से याद करते मिलेद्य 1950 और 60 के दशक की बालिका शिक्षा तथा महिला सशक्तिकरण के काम में लगीद्य महिला समाज कर्मियों से मिलना अभूतपूर्व थाद्य विमला बहुगुणा, शशी प्रभा रावत, शोभा बहन, दिशा बहन व राधा दीदी से मिलना, बात करना अविस्मरणीय रहेगा। खाड़ी में स्वर्गीय दुलारी बहन से मिलना तो वरदान जैसा था क्योंकि हमारी मुलाकात के आठवें दिन उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

इसी भांति चिपको आंदोलन के विभिन्न साथियों व कार्यकर्ताओं की यात्रा मे बढ़–चढ़कर भागीदारी ने यात्रा को जीवंत बनाया। विभिन्न पर्यावरणीय आंदोलन तथा कार्यों का प्रभाव तथा जानकारी एकदम हासिये मैं दिखाई दी। 'नशा नहीं रोजगार दो' आंदोलन, कनकटा बैल, 70 व 80 के दशक का छात्र आंदोलन धीरे–धीरे राजनीतिक शोरगुल में भुलाया जाने लगा है। अस्कोट–आराकोट यात्रा को याद करने वाले लोगों से मुलाकात हुई। आधुनिक विकास के प्रति लालायित समाज प्रकृति व पर्यावरणीय नुकसान को लेकर चुप्पी साधे हैं। टिहरी के पराभव ने आधुनिक विकास के जीत की घोषणा कर दी है। पर्यावरणीय सवालों का आधुनिक मुहावरा हमारे वनवासी समाज की मूल अवधारणाओं तथा भाषा से मेल नहीं खाता दिखा।

पहाड़ों में विशालकाय होटल निर्माण, जमीनों की खरीद–फरोख्त लगातार बढ़ रही है। स्थानीय समाज इस सवाल पर दो हिस्सों में बटा दिखता है। सख्त भू–कानून की मांग भी सबसे ज्यादा इन्हीं इलाकों से आ रही है। प्राकृतिक संसाधनों को लेकर संघर्ष भी यहां तीखा होता जा रहा है। यह कमोबेश पूरे उत्तराखंड में सबसे बेहतर आबोहवा वाली ऊंची जगह पर दिखाई दे रहा है।

पूरे पहाड़ में लगातार कूड़े के पहाड़ खड़े होते जा रहे हैं। प्लास्टिक कचरा उत्तराखंड के हर कोने तक पहुंच रहा है, लगातार बढ़ता जा रहा है, गांव के रास्तों के साथ–साथ कचरा भी चलता रहता है, हर नगर–निगम, नगर–पालिका व नगर–पंचायत में सुंदर गीत गाते हुए कचरा गाड़ी चलती रहती है, लेकिन कचरे का ढेर बिल्कुल शहर के नजदीक बढ़ता जा रहा है। इस कचरे से निपटने में सरकारे, नगर– निकाय व समाज विफल दिखता है।

उत्तराखंड में लगातार नए कस्बे बढ़ते व फैलते जा रहे हैं।पिछले दो–तीन दशकों में सैकड़ों नए कस्बे तेजी से फले फूले हैं। यहां नई बाजार नीति, स्कूल, बैंक सुविधाएं, बारातघर, निजी अस्पताल खुले हैं गांव में रहने वाली बड़ी आबादी गांव से यहां स्थापित हो गई है। इन कस्बों का अनियोजित निर्माण व अशुरक्षित भविष्य के लिए खतरा है। 2–3 दसको पहले तक पहाड़ों का उत्पादक मानव श्रम कस्बों व शहरों में आकर लगातार अनउत्पादक श्रम में तब्दील हो रहा है।

पहाड़ के गांव में होने वाला लघु–निर्माण (सार्वजनिक निर्माण) जैसे पंचायतघर, यात्री विश्राम गृह, सार्वजनिक शौचालय, पटवारी चौकी, एनम सेंटर, प्राथमिक विद्यालय, लघु नैहरे, व पुल बहुत ही घटिया स्तर के निर्माण सामग्री से बनाए जा रहे हैं। इन में व्याप्त भ्रष्टाचार पर ना हो तो चर्चा हो रही है ना इसका विरोध हो रहा है इस भ्रष्टाचार में संलिप्त लोग सब हमारे आसपास के लोग हैं। एक आश्चर्यजनक चुप्पी इस भ्रष्टाचार को लेकर हमें दिखती है।

राज्य निर्माण के 22 साल पूरे होने के पश्चात भी सार्वजनिक सुविधाओं की आपूर्ति या बहाली बहुत निराशाजनक है, लोग यह कहते मिलते हैं कि इससे बेहतर तो उत्तर प्रदेश में थे, सरकारी विभागों की लापरवाही चरम पर है। कृषि विभाग व उद्यान विभाग जिसकी नीतियां लागू कर रही हैं उससे हमारी परंपरागत कृषि व उद्यान को जबरदस्त नुकसान पहुंच रहा है। लगातार बढ़ता बंजर, सरकती नदियां, नाले, घोर, जलते जंगल फैलता चीड़ भी हमारी पर्यावरणीय महामारी की ओर इशारा कर रहा है। लगभग सभी इलाकों में लोगों की स्वीकारोक्ति है कि पेयजल व सिंचाई योजनाओं ने हमारी छोटी नदियों, गधरो व तालों को लगभग समाप्त कर दिया है। नदियों में मिलने वाली मछलियां तथा अन्य जलीय जीव लगातार घटते जा रहे हैं।

इन सब निराशाओ के साथ–साथ बेरोजगारी व पलायन हमारी समस्त संभावनाओं के द्वारा बंद कर दे रहे हैं। जिन युवाओं को पहाड़ के जैसे श्रमकारी जीवन व सरल व सुगम बनाना था वो युवा रोजगार खासकर नौकरियों के लिए पहाड़ से लगातार मैदानों या महानगरों की ओर जा रहे हैं।

धार्मिक व जातिगत भेदभाव भी खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है। जिन गॉवो व लोगों ने किसी अन्य धार्मिक समूह को देखा तक नहीं है, वह भी टेलीविजन व फोन से अपनी राय बना रहे हैं। जातिगत भेदभाव शहरों बाजारों व कस्बों में कम हुआ है, छुआछूत घटा है, लेकिन गांव में भेदभाव जस का तस बना हुआ है। कई बार हिंसक तक हो जा रहा है।

इन सब निराशाओं के बावजूद कई आशा जनक बातें भी इस यात्रा के दौरान देखने को मिली, पहाड़ की महिलाएं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से संगठित हो रहे हैं। रोजगार के नई पहल कर रहे हैं, युवाओं ने कम निवेश में किए जा सकने वाले कारोबार शुरू किए हैं। बालिका शिक्षा बेहतर दिखाई देती है, सरकारी स्कूल उनके शिक्षक नवाचार व रचनात्मकता के साथ लगातार बेहतर होते जा रहे, सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या भी लगातार बढ़ रही है।

इन तमाम और ढेर सारे अन्य अनुभवों संवादों के साथ यहां यात्रा समाप्त हुई। 20–21 जून को देहरादून में विभिन्न जन संगठनों, संस्थाओं, आंदोलन समूहों ने मिलकर आगे के कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की।

यात्रा के दौरान चर्चा किए गये मुख्य बिन्दु:

सामाजिक मुद्दे	आर्थिक मुद्दे	पर्यावरणीय मुद्दे
धार्मिक एवं जातीय दुर्भावना का फैलाव	स्थानीय अर्थव्यवस्था का कमजोर होना	जल, जंगल, जमीन के उपर स्थानीय लोगों का अधिकार नही रहा
लोक चेतना जागरण का अभाव	आर्थिक विषमता में बढाव	ग्लेसियर, नदियां, धारे, नौले सब सूख रहे हैं
उच्च शिक्षा के अवसरों में बृधि परन्तु में गुणवत्ता में गिरावट	आजिविका के अभाव के कारण बेरोजगारी	बांधों और विकास परियोजनाओं के कारण, नदियों का प्रवाह न्यूनतम हो गया
युवाओं के लिये व्यवसायिक प्रशिक्षण का अभाव	महंगाई के कारण कमजोर वर्गो में अधिक भार	वन पंचायत प्रणाली होने के बावजूद स्थानीय लोगों को लाभ नही
स्वास्थ्य एवं सफाई – चिकित्सा एवं नागर स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी	कृषि उत्पादन एवं लाभ की कमी	जलवायु परिवर्तन के कारण भीषण गर्मी, सर्दी एवं वर्षा
पुरुषों में शराब की लत	उत्पादित माल के लिये बाजार की कमी	प्राकृतिक आपदा – भूस्खलन, अचानक बाढ़
महिलाओं के उपर घरेलू काम का बोझ एवं आर्थिक चुनौतियां बढी हैं	आय के स्थानीय श्रोतों की कमी	भूकंप आवृति एवं तीव्रता बढी है
पलायन एवं विस्थापन	सरकारी योजनाएं – नरेगा इत्यादि से सीमित लाभ	प्लास्टिक कचरे की बढोत्तरी
आपसी संवाद और सामुहिक कार्यों की परंपरा में गिरावट	स्थानीय संसाधनों का दोहन परन्तु स्थानीय लाभ नही	अनियंत्रित पर्यटन के कारण, प्राकृतिक सौन्दर्य का ह्रास

यात्रा के दौरान, हमने उन तमाम जन नायकों/लोक नायकों को इस महत्वपूर्ण अवसर पर स्मरण किया जिन्होंने पछले 100 वर्षो के दौरान विविध भाषाई, भोगोलिक, सांस्कृतिक परंपराओं, रीति रिवाजों व मान्यताओं वाले समाज को एकजुट किया। इसके अलावा जिन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनों व उसके पश्चयात अपना जीवन समाज की बेहतरी के लिये न्योछावर किया। यात्रा के दौरान अलग–अलग स्थानों में लगभग 800 सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, व्यवसायिक एंव बुद्दिजीवी संगठनों के साथियों ने कार्यक्रम के आयोजन में अत्यधिक सहयोग दिया, उनके प्रति आभार।

1.4 २० जून २०२२ – सदभावना यात्रा समापन गोष्ठी, प्रैस क्लब, देहरादून

प्रातः 10 बजे सद्भावना यात्रा दल व प्रदेश भर से आये साथी गांधी पार्क देहरादून में एकत्र हुये, वहाँ से जनगीतों तथा नारों के साथ समस्त यात्रा दल प्रैस क्लब देहरादून पहुँचा। वहाँ पहुचकर यह एक गोष्ठी में बदल गया।

जनगीतों के साथ दिन के प्रथम सत्र की शुरुआत हुई। पहले सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार राजीव लोचन शाह व वरिष्ठ गांधीवादी विचारक बीजू नेगी ने की तथा सभा का संचालन वरिष्ठ आंदोलनकारी तथा महिला मंच की संयोजिका कमला पंत ने किया।

इसके पश्चात् यात्रा दल में शामिल रहे उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, गोपाल भाई व भुवन पाठक ने अपने यात्रा अनुभवों को साझा किया।

8 मई 2022 को हल्दानी से शुरू होकर तकरीबन 4500 किलोमीटर यात्रा पूरी करने के पश्चात् 15 जून को यात्रा देहरादून पहुँची। 15 जून तक लगातार देहरादून शहर के आसपास सद्भावना कार्यक्रम आयोजित होते रहे, जिनमें बैठकों के अलावा खाराखेत की यात्रा तथा देहरादून में अलगदृअलग स्थानों पर सद्भावना दौड़ का आयोजन किया गया। इन समस्त कार्यक्रमों में लगभग 200 से अधिक बैठकें, गोष्ठियाँ, जनसभाएँ, नुक्कड़ सभाएँ, सांस्कृतिक रैलियों का आयोजन किया गया। सद्भावना यात्रा के दौरान प्रत्यक्ष रूप से 10000 लोगों से संवाद स्थापित किया गया तथा 800 से अधिक साथियों ने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में सहायता की।

जिन भी साथियों ने आवास, भोजन व बैठकों का आयोजन किया, उनको धन्यवाद ज्ञापित किया गया। यात्रा की योजना–प्रेरणा के लिए राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली का आभार व्यक्त किया गया, जिनकी सहायता के बिना इस महत्वपूर्ण यात्रा का संचालन संभव नहीं था।

वैचारिक रूप से यात्रा की योजना बनाने में सहायता के लिए पद्मश्री इतिहासकार डॉ शेखर पाठक, राजीव लोचन साह, पीसी तिवारी, सुरेश भाई, डॉक्टर रमेश पंत, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, दर्शना जोशी, सुंदर सिंह मेहरा, लक्ष्मण आर्य व राजीव गांधी फाउंडेशन के विजय महाजन व वरिष्ठ सद्भावना फेलो विजय प्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यात्रा दल का नेतृत्व उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, रीता इस्लाम, गोपाल भाई, सर्वोदय कार्यकर्ता साहब सिंह सजवान, सुंदर सिंह बरोलिया, विजय महाजन, प्रो सोमनाथ घोष, परमानंद भट्ट, जीत सिंह सनवाल, लक्ष्मी सनवाल, प्रयाग भट्ट, रजनीश बिष्ट, रेवा बिष्ट, हिदायत आजमी, मुरारी गोस्वामी, दिनेश लाल, नरेंद्र कुमार, प्रेम बहुखंडी, पीसी तिवारी, किरण आर्य, अमीनुल रहमान, प्रभात उप्रेती, दिनेश कुंजवाल, ललित फर्स्वाण, हरीश ऐठानी, डॉक्टर रमेश पंत, सुंदर सिंह मेहरा आदि शामिल रहे।

जिन प्रमुख साथियों ने यात्रा पड़ावों पर सहयोग किया उनमें सर्व श्री डॉक्टर अजय पुंडीर, नैन सिंह डगवाल, रूपेश कुमार, प्रभात ध्यानी, मनमोहन अग्रवाल, राजीव लोचन साह, शेखर पाठक, अनिरुद्ध जडेजा, स्वाति मवाली, रमा बिष्ट, बचे सिंह बिष्ट, दिनेश कुंजवाल, अनिला पंत, चंद्रा पंत, महेश पुनेठा, महेंद्र रावत, भगवान रावत, राजेश उप्रेती, रेनू ठाकुर, जगत मतोलिया, नरेश द्विवेदी, अनिल कार्ले, कमलदीप रावत।

चर्चा की शुरुआत यात्रा दल का नेतृत्व कर रहे इस्लाम हुसैन ने की। उन्होंने कहा कि तमाम तरह की शंकाओं व डर के बावजूद यात्रा सफल रही। यात्रा के दौरान हमने यात्रा के उदेश्य को बेहिचक निडरता से लोगों के सामने रखा। भाईचारा व कौमी एकता के गीत व नारे लगाये।

लोगों ने इस पहल का खुलकर स्वागत किया। उसमें शामिल हुये, गोपाल भाई ने कहा कि यात्रा के दौरान एक बात समझ में आई कि समाज का खुद से अपनी समस्याओं के समाधान की पहलें कमजोर होती जा रही है। खासकर जिस भी काम का जिम्मा राष्ट्रध राज्य ने लिया उसको लेकर एक खास तरह की बैचेनी और उदासीनता समाज में दिखाई देती है। जिन त्योहारों व उत्सवों को हम हर्ष व खुशी व्यक्त करने के लिए मनाते थे, अब वो त्योहार गुस्सा और घृणा व्यक्त करने के माध्यम बन गये हैं। और जो धर्म राजसत्ता से टकराकर पैदा हुये थे वही धर्म अब राजसत्ता की चाटुकारिता में व्यस्त हो गये हैं।

यात्रा दल संयोजक भुवन पाठक ने उन समस्याओं की ओर इशारा किया जो आज भी समाज में दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि समाज में आपसी संवाद व संपर्क घटा है। धर्म–जाति, भौगोलिक बोली–भाषा के आधार पर छोटे–छोटे समूह बन गये हैं। जिनका आपसी सम्पर्क व संवाद लगातार घट रहा है। हम बिना एक दूसरे का सच जाने ही विरोध करने लगे हैं। राज्य निर्माण के 22 वर्षों बाद भी प्रदेश के गाँव बदहाल स्थिति में हैं तथा गाँवों को लेकर सटीक व व्यवहारिक योजनाओं का अभाव है।

चर्चा में पीसी तिवारी ने यात्रा को प्रांसगिक बताते हुए, देश में जिस तरह से हिंसा व नफरत को लेकर आम सहमति बनाने का प्रयास किया जा रहा है, के खिलाफ उत्तराखंड में सबको एकजुटता से आगे बढ़ने पर बल दिया। पी सी तिवारी ने कहा जातीय– धर्म सद्भाव को बनाये रखने के लिये दीर्घकालीन योजनाओं पर काम किया जाना चाहिये। अगले वक्ता के तौर पर विजय महाजन ने यात्रा के मूल विचार व राजीव गांधी फाउंडेशन की भूमिका पर बात की तथा सद्भावना से आगे बढ़कर समाधान तक कैसे पहुँचे दृ इस सवाल को महत्वपूर्ण बताया। विजय प्रताप ने सांप्रदायिकता के बढ़ते जहर को रोकने के लिये सामूहिक रणनीति व छोटे – छोटे सार्थक प्रयासों पर बल दिया। अध्यक्षीय भाषण में बीजू नेगी व राजीव लोचन शाह जी ने पुनरू यात्रा के अनुभवों को भविष्य की रणनीति के लिये महत्वपूर्ण बताया तथा इस क्रम को लगातार जारी रखने की अनिवार्यता पर बल दिया।

चर्चा में पीसी तिवारी ने यात्रा को प्रांसगिक बताते हुए, देश में जिस तरह से हिंसा व नफरत को लेकर आम सहमति बनाने का प्रयास किया जा रहा है, के खिलाफ उत्तराखंड में सबको एकजुटता से आगे बढ़ने पर बल दिया। पी सी तिवारी ने कहा जातीय– धर्म सद्भाव को बनाये रखने के लिये दीर्घकालीन योजनाओं पर काम किया जाना चाहिये। अगले वक्ता के तौर पर विजय महाजन ने यात्रा के मूल विचार व राजीव गांधी फाउंडेशन की भूमिका पर बात की तथा सद्भावना से आगे बढ़कर समाधान तक कैसे पहुँचे दृ इस सवाल को महत्वपूर्ण बताया। विजय प्रताप ने सांप्रदायिकता के बढ़ते जहर को रोकने के लिये सामूहिक रणनीति व छोटेदृछोटे सार्थक प्रयासों पर बल दिया। अध्यक्षीय भाषण में बीजू नेगी व राजीव लोचन शाह जी ने पुनरू यात्रा के अनुभवों को भविष्य की रणनीति के लिये महत्वपूर्ण बताया तथा इस क्रम को लगातार जारी रखने की अनिवार्यता पर बल दिया।

द्वितीय सत्र

भोजन के पश्चात् द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें सभी साथियों ने अपना परिचय तथा वैचारिक पक्ष रखा। इस सत्र कि अध्यक्षता कमला पंत एवं पीसी तिवारी ने की तथा संचालन भुवन पाठक ने किया। चर्चा की शुरुआत में पीसी तिवारी ने आज के माहौल में सक्षम राजनैतिक हस्तक्षेप कि आवश्यकता पर बल दिया।

विजय प्रताप ने राष्ट्रीय माहौल पर बात करते हुये कहा कि समाज में विभिन्न धर्मो– जाति समूहों के बीच आपसी संवाद व संबंधों पर चौतरफा हमला हो रहा है। आज के माहौल में आपसी संवाद लगातार बना रहे यह आवश्यक है।

रामनगर से आए साथी प्रभात ध्यानी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ सशक्त राजनैतिक हस्तक्षेप की वकालत की। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए समस्त वैचारिक संगठनों को एकजुट होना पड़ेगा, गांधीवादी विचार व संगठनों की जिम्मेदारी अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है।

टिहरी से आए देवेन्द्र बहुगुणा ने सर्वोदय विचार व आंदोलन को पुनः संगठित करने पर जोर दिया तथा कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान तथा उसके बाद मीरा बहन व सरला बहन की वैचारिक व सांगठनिक परंपरा का एकजुट होना चाहिए। देहरादून के साथी प्रेम बहुखण्डी ने उत्तराखंड खासकर पर्वतीय क्षेत्रों के लिए नये विकास के माडल पर सोचने की आवश्यकता पर जोर दिया तथा नेहरू माडल पर पुनर्विचार की आवश्यकता पर जोर दिया।

सल्ट से आए साथी शंकर ने ग्रामीण समुदाय में व्याप्त निराशा व हताशा को तोड़ने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण समाज जिसमें महिलाओं की अधिकता है। उनके साथ संवाद किया जाना चाहिए। उनकी आजीविका को सशक्त बनाना चाहिए।

राजीव लोचन शाह जी ने आजादी के 75 वर्षों बाद के पहाड़ की पीड़ा को संबोधित किया। पिछले 8–10 सालों में माहौल इतना बदल गया है कि चारों ओर भय–निराशा व मानसिक गुलामी दिखाई देती है। ऐसे माहौल में जब कहीं भी आशा व उत्साह नहीं दिखाई दे रहा था तब सद्भावना यात्रा ने संभावना के नये द्वार खोले हैं।

देहरादून के साथी त्रिलोचन भट्ट ने सद्भावना यात्रा के बाद की संभावनाओं व चुनौतियों पर प्रकाश डाला। इस सत्र के अध्यक्षीय भाषण में कमला पंत जी ने सद्भावना यात्रा जैसे कार्यक्रमों की प्रासंगिकता का महत्वपूर्ण माना उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में जिला व विकास खंड स्तर पर सद्भावना समितियों का गठन किया जाना चाहिए। ताकि यात्रा के दौरान उत्साहित साथियों को जोड़ा जा सके। उन्होंने देहरादून में चल रहे शांति दल के काम को भी सभा में प्रस्तुत किया। अंत में आज की बैठक के समापन की घोषणा की।

प्रेस नोट – 20 जून 2022

हम सदभावना के साथी पिछले 45 दिनों से उत्तराखंड में 4500 किलोमीटर की यात्रा के पश्चात आज यहां एकत्र हुए हैं। इन 45 दिनों में 200 से अधिक कार्यक्रम तथा विभिन्न स्थानों पर रात्रि प्रवास के दौरान तकरीबन 10,000 लोगों से हमारा संपर्क हुआ, इस दौरान लगभग 800 से अधिक साथियों ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर यात्रा में सहयोग किया, यात्रा के दौरान आयोजित अधिकांश कार्यक्रमों में सभा संबंधी संसाधनों जैसे कुर्सियां, मेज, माइक सहित जलपान की व्यवस्था स्थानीय आयोजक साथियों के द्वारा की गई, यात्रा दल के भोजन व आवास का इंतजाम भी अधिकांश स्थानों पर स्थानीय सहयोगियों द्वारा किया गया।

8 मई को स्वर्गीय कुंवर प्रसून के जन्मदिन के अवसर पर हल्द्वानी से शुरू होकर यात्रा उधम सिंह नगर की तराई से होते हुए पहाड़ों की मुख्य घाटियों, ऊंचे पहाड़ों, सुंदर जंगलों, नदियों, गाड़ो, गावों, बाजारों, नगरों को पार करते हुए 40 दिन बाद देहरादून पहुंची, विगत 5 दिनों में देहरादून नगर में आसपास विभिन्न संगठनों, साथियों ने कार्यक्रमों का आयोजन किया।

इस यात्रा के दौरान हम सदभावना के साथियों को अभूतपूर्व अनुभवों से गुजरने का मौका मिला, कुली बेगार आंदोलन के 100 सालों, आजादी के 75 सालों तथा अलग राज्य के 22 वर्षों के दौरान जो परिवर्तन हुए या जो स्थितियां बनी है उनको जानने समझने का मौका मिला, जिन भी लोगों से हम मिले शुरुआती संकोच वह झिझक के बाद बुजुर्गों दृ महिलाओं, युवाओं ने अपनी राय वह बात खुलकर सामने रखी। इस यात्रा के दौरान जो भी बातें हमारे सामने आई उनको संसीदा रूप में आपके सामने प्रस्तुत करते है।

1. राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक सद्भाव भाईचारा व आपसी प्रेम के माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है लेकिन स्थानीय स्तर पर इसकी अभिव्यक्ति उतनी सशक्त नहीं दिखाई दी, लोगों ने आज के माहौल को शांति व बेहतर मानवीय विकास के प्रतिकूल माना।

2. हमारे समाज में विभिन्न धार्मिक व जातीय समूहों के बीच आपसी संवाद के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। पलायन व मिलकर साथ में काम करने के अवसर घटने के कारण आपसी संवाद – बातचीत व सहकार लगाना कम हो रहा, इससे आसानी से एक दूसरे के बारे में गलत जानकारियों को सच मान लिया जा रहा है।

3. जातियों के बीच भेदभाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर जातीय आधार पर भेद–भाव घटा है।

4. समस्त यात्रा के दौरान यह बात सामने आई कि हम देवभूमि के साथ–साथ वनभूमि के लोग हैं हमारी खेती दृपशुपालन, खान–पान, फल फूल, दवा, दारू दैनिक उपयोग की बहुत सी वस्तुएं, आबोहवा, देवी देवता सब वनों से आते हैं।

5. आर्थिक तौर पर पहाड़ वह मैदान दोनों जगह गरीबी – पलायन और बेकारी लगातार बढ़ रही है।

6. पहाड़ में लगातार नया बंजर फैल रहा है।

7. पहाड़ प्लास्टिक तथा अन्य तरह के कचरे के ढेर में बदलता जा रहा है। ठोस कूड़ा निस्तारण की तकनीक व योजनाओं का अभाव है।

8. अनियंत्रित व नियोजित भवन निर्माण घातक श्रेणी तक असुरक्षित होता जा रहा है, नए बाजारों, कस्बों, नगरों के भौतिक विकास ने नदियों, खालो, गधेरो को अपनी चपेट में ले लिया, जो लगातार प्राकृतिक आपदाओं का कारण बन रहा है।

9. राज्य में सार्वजनिक निर्माण जैसे पंचायत घर, यात्री विश्राम गृह, सार्वजनिक शौचालय, पटवारी चौकी, एएनम सेंटर, प्राथमिक विद्यालय घटिया निर्माण व भ्रष्टाचार की भेंट चल रहे हैं और इस सवाल पर सार्वजनिक बहस या कार्यवाही नहीं हो रही है।

10. लगातार सिकुड़ती खेती के कारण जहां एक और भोजन के लिए निर्भरता बाजार पर बढ़ रही है वही खानपान में स्थानीयता व मौसम संबंधी भोजन कि प्रचुरता घट रही है।

11. बेहतर वन्यता व जैव विविधता वाले क्षेत्र लगातार पर्यटन व्यवसाय के लिए बेचेध्खरीदे जा रहे हैं, विशालकाय होटल निर्माण तथा जनसंख्या दबाव के चलते प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव उसके लिए संघर्ष बढ़ता जा रहा है।

12. राज्य के भीतर पलायन के कारण एक नई कस्बाई जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, जिसके कारण 10– 20 साल पहले तक पहाड़ का उत्पादक श्रम अब अनुत्पादक श्रम पर निर्भर समाज में बदल रहा है।

13. राज्य निर्माण के 22 वर्ष बाद भी हम अधिकांश गांवों तक स्थानीय स्वास्थ्य, बेहतर शिक्षा, आसान संचार सार्वजनिक यातायात, स्थाई व टिकाऊ रोजगार, साफ व पर्याप्त पेयजल एवं सिंचाई सुविधाएं स्थापित नहीं कर पाए हैं।

14. हिमालय की भौगोलिक एवं भूगर्भीय संरचना के अनुरूप विकास का मॉडल नहीं बन पाए।

15. विशाल मझोले बांध व सुरंग आधारित जल विद्युत परियोजनाएं बनने का क्रम लगातार जारी है उससे होने वाला पर्यावरणीय तथा सामाजिक विनाश जारी है।टिहरी बांध से विस्थापित गांव आज तक उचित विस्थापन का संघर्ष कर रहे हैं।

16. जंगली जानवर व निराश्रित पालतू पशु प्रदेश निवासियों के जीवन व खेती के लिए खतरा बनते जा रहे हैं, लोगों का जीवन व खेती जानवरों के हमले का शिकार होते जा रही है।

17. जंगलों की आग, गिरता जलस्तर, सूखते जल स्रोत, घटती जैव विविधता, असमय बारिश या सुखा जनजीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है।

18. कोविड–19 के बाद घर वापसी कर चुके नौजवानों या मानव श्रम के सामने रोजगार का संकट बना हुआ है, तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक नहीं पहुंचा।

19. शिक्षा खासकर सरकारी शिक्षा के अवसर बड़े हैं बालिका शिक्षा के स्तर में आशातीत सुधार हुआ है। बेहतर होते सरकारी विद्यालयों में रचनात्मक अध्यापकों की बहुत सारी कहानियां और उदाहरण हमको देखने सुनने को मिले।

20. महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ी है महिलाओं के समूह, सहकारी समूह और संगठन आर्थिक उत्पादन के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति लगातार बढ़ा रही हैं।

21. स्वतंत्र व अध्ययनशील युवाओं के समूह अपने आस–पास में बदलाव के प्रयास कर रहे हैं, सामाजिक शोध व हस्तक्षेप की पहलो का नेतृत्व कर रहे हैं लेकिन यह अधिकांश प्रयोग शहरों के आस–पास केंद्रित हैं।

22. पहाड़ जो सदियों से सहभागिता व सामूहिकता के मूल्यों से एक दूसरे की सहायता तथा मिलकर अपने बंदोबस्त करते थे अब सरकार पर निर्भर या अनुदान पर निर्भर होते जा रहे हैं, जिन सार्वजनिक सुविधाओं को हमारे पुरखों ने अपने कौशल, सामूहिक श्रम, नेतृत्व से खड़ा किया अब उनकी देखभाल या पुनर्निर्माण के लिए सरकारी योजनाओं की ओर देख रहे हैं।स्वावलंबी समाज धीरे–धीरे याचक समाज में तब्दील हो रहा है।

23. अनेक स्थानों पर लोग अपने प्राकृतिक संसाधनों, पंचायती वनों, पानी, नदियों, धराटो की देखभाल करते दिखे।

हमारा समाज जिसका इतिहास व लोक गाथाएं अपने रचनात्मक निर्माण, शांति पूर्ण प्रतिरोध व सामूहिक संघर्षों व जनपक्षीय आवाजों से भरा है जहां विगत 100 वर्षों में जनपक्षीय नेतृत्व व कार्यकर्ताओं की समृद्ध परंपरा रही है वहां अब सामूहिक जनपक्षीय पहले खामोश होने लगी हैं।हम निर्माता या नेतृत्व करता समाज से श्रोता समाज में बदल रहे हैं गलत नीतियों, गलत सूचनाओं, भ्रामक प्रचार के प्रति हमारा रवैया पहले से ज्यादा उदासीन दिखता है।

सदभावना यात्रा के दौरान हम अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम का लगभग शत–प्रतिशत पालन कर पाये उन समस्त स्थानों पर जा पाये जहां जाने का निर्णय किया था। हमने कोशिश की इस यात्रा के दौरान हम अपनी पूर्व निर्धारित मान्यताओं और शिक्षाओं के स्थान पर समाज में प्रचलित अवधारणाओं तथा मान्यताओं को समझ पाए।समाज के सही और गलत को तय करने के विवेक के पास पहुंचे, एक तटस्थ अध्ययन करता के रूप में इस यात्रा को कर पाए।अपने उन तमाम जननायकओं के कार्यक्षेत्र व लोग शिक्षण के क्षेत्र में जा पाए जहां उनके काम और विचार के बीज मौजूद हैं।

हमें हमारा समाज तमाम सामाजिक सवालों तथा समस्याओं के बावजूद नए व पुराने ज्ञान व परंपरा के बीच समन्वय बनाता दिखा, चर्चा में भागीदारी करता दिखा, कई चीजों को लेकर आशंकित तो भविष्य को लेकर आशान्वित दिखा, हमारी महान लोकतांत्रिक परंपराओं, भाईचारा, आपसी प्रेम, सामाजिक शांति, व सद्भाव के स्वरों के साथ सहमति जताता दिखा, मुख्य रूप से -

1. सामाजिक सद्भाव के लिए संवाद व सहकार
2. आर्थिक सद्भाव के लिए संवाद व सहकार
3. पर्यावरणीय सद्भाव के लिए संवाद व सहकार

अतः उपरोक्त के लिए व्यापक अवसर व संभावनाएं यात्रा दल को दिखाई देती हैं।

I.5 २१ जून २०२२ – मसीही ध्यान केन्द्र (राजपुर) देहरादून

आज की बैठक का आयोजन सद्भावना के काम को भविष्य में जारी रखने के लिए योजना बनाने हेतु किया गया है। 20 जून 2022 को प्रेस क्लब देहरादून में आयोजित बैठक में सभी प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि भविष्य में सामाजिक व पर्यावरणीय सद्भाव के लिए लगातार संवाद जारी रहना चाहिए।

मसीही ध्यान केंद्र में आयोजित बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार राजीव लोचन शाह तथा सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम भाई ने संयुक्त रूप से की। सभा का संचालन भुवन पाठक ने किया।

सभा संचालक ने सभा से अनुरोध किया दृ उपस्थित साथी जो प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से पधारे हैं, आज केवल भविष्य के कार्यक्रमों का सुझाव देंगे ताकि कोई ठोस योजना बनाई जा सके। यदि उनके कोई सुझाव व प्रस्ताव हों या किसी व्यक्ति के नाम पर आपत्ति हो तो उसे भी सदन के सम्मुख रखा जा सकता है।

- कमला पंत ने इस पूरी प्रक्रिया को चौपाल या खुले मंच के रूप में जारी रखने पर जोर दिया। साथ ही कहा कि सभी कार्यक्रमों की स्वायत्तता बनी रहे इसके लिए सामूहिक तौर पर सद्भावना संवाद चलाये रखना होगा।

- बीजू नेगी ने कहा कि सोशल मीडिया पर घृणा के खिलाफ एक समूह का गठन किया जाए तथा –'हमारे पुरखे' कार्यक्रम के तहत स्थानीय स्तर पर भी सद्भावना कार्यक्रमों पर जोर दिया जाए।

- चेतना आन्दोलन के साथी शंकर गोपाल ने वर्किंग ग्रुप बनाकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

- अजय जोशी ने वैचारिक मिलन, निरंतर संवाद व यात्राओं के आयोजन को महत्वपूर्ण बताया।

- देवेन्द्र बहुगुणा जी ने स्वतंत्र व पूर्णकालिक कार्यकर्ता निर्माण तथा लगातार कोई कार्यक्रम जो बिना लागत व तामझाम के किये जा सकते हों, जैसे स्वधर्म प्रार्थनाय को नियमित करने व करवाने पर बल दिया।

- अर्चना बहुगुणा ने स्थानीय स्तर पर युवा शिविर तथा सद्भावना यात्राएँ आयोजित करने पर बल दिया तथा कहा कि रुद्रप्रयाग में सद्भावना यात्रा तथा सद्भावना शिविर की जिम्मेदारी हम लेते हैं।

- मनीष रावत ने बताया कि नए लोगों की पहचान कर उनको संवाद में कैसे शामिल करें। मनीष रावत ने सद्भावना संवाद को ग्राम स्तर पर ले जाने हेतु वहाँ कार्यरत सामाजिक ईकाइयाँ जैसे महिला मंगलदल, युवा मंगलदल व ग्राम समितियों को जोड़ने का प्रस्ताव रखा।

- प्रभात ध्यानी ने यात्राओं की जरूरत पर बल देते हुए बताया कि सांप्रदायिक तनाव पर हमारी क्या तैयारी होनी चाहिए। सद्भावना को बढ़ाने के लिए निजी स्तर पर सद्भावना खेलों का आयोजन किया जाए तथा इन आयोजनों में संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा जाए।

- डा वसुधा पंत ने कहा कि आगामी वर्षा काल में पूरे प्रदेश में सद्भावना वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया जाना चाहिए।

- चन्द्रा पंत ने कहा कि युवाओं के साथ युवा शिविर तथा जनगीत आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमो क आयोजन किया जाना चाहिए।

- रुपेश कुमार ने कहा कि सांस्कृतिक आंदोलन को आगे बढ़ाना अति आवश्यक है। किसी भी महत्वपूर्ण घटना पर फेक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाना भी अपने आप में महत्वपूर्ण कदम है।

- प्रेम बहुखण्डी ने युवाओं के साथ संवाद बनाने के लिए सोशल मीडिया को टूल के रूप में इस्तेमाल करने व उनकी भागीदारी बढ़ाने के बारे में योजना बनानी होगी।

- राजीव गांधी फाउंडेशन के श्री विजय महाजन ने कहा कि सद्भावना संवाद से आगे बढ़कर समाधान तक जाना चाहिए। संवाद के नए माध्यम सोशल मीडिया पर फोकस करना चाहिए। युवाओं को आकर्षित करने वाली विधाओं के बारे में सोचना तथा असहमतियों को सुनना भी चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण से पहले राजीव लोचन शाह ने इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिये एक संचालन समिति तथा कार्य समिति तय करने का प्रस्ताव सदन में रखा। इस प्रस्ताव के उत्तर में आम सहमति से तय किया गया कि 21 जून 2022 को उपस्थित सभी लोग तथा पूर्व में तय सद्भावना यात्रा समिति के लोग ''उत्तराखंड सद्भावना संयोजन समिति'' के सदस्य होंगे। तथा एक नौ लोगों की कार्यसमिति जो कि सद्भावना कर्यक्रमों का संचालन तथा निगरानी करेगी। तय की गई जिसमें निम्न नाम है :

1) सर्व श्री अजय सल्ट – सल्ट जिला अल्मोड़ा; 9411751625
2) डा वसुधा पंत – अल्मोड़ा; 9456722422
3) गोपाल भाई – बेरीनाग (पिथौरागढ़); 8923523957
4) शंकर गौपाल – देहरादून; 8923523959
5) अर्चना बहुगुणा – रुद्रप्रयाग; 9690413541
6) प्रेम बहुखण्डी – देहरादून; 9810881284
7) विनोद बढोनी – घनसाली, टिहरी; 9411734310
8) सुरेन्द्र थापा – सहसपुर, देहरादून; 8077882019
9) भुवन पाठक – गरुड़, बागेश्वर; 9456813288

यह समिति आगामी एक वर्ष तक उत्तराखण्ड में सद्भावना संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों तथा अभियानों के लिये जिम्मेदार होगी। इसके पश्चात् राजीव लोचन शाह जी ने सभा में वर्ष के लिये कार्यक्रमों मसोदा पेश किया।

1) सद्भावना समितियो का गठन दृ यात्रा के दौरान संपर्क में आये साथियों तथा आयोजन से जुड़े साथियों के साथ जिला स्तर, विकास खंड स्तर व नगर तथा ग्राम स्तर पर सद्भावना समितियों के गठन किया जायेगा।

2) सद्भावना सम्मेलन – आगामी वर्ष भर में प्रदेश में चार सद्भावना सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। इनका समय व स्थान कार्य समिति की बैठक में तय किया जायेगा।

3) सद्भावना यात्राएँ दृ स्थानीय स्तर पर तीन सद्भावना यात्राओं का आयोजन किया जायेगा

1– तराई विकास नगर से बनबसा की यात्रा
2– जनपद रुद्रप्रयाग व चमोली की यात्रा
3– चंपावत जनपद की यात्रा

4) इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर अन्य प्रयासों तथा सद्भावना कार्यक्रमो के साथ सहभागिता।

इन प्रस्तावों को सर्वसम्मति से पारित किया गया तथा सभी साथियों ने इस पर सहमति भी व्यक्त की। तत्पश्चात् सभा अध्यक्ष श्री राजीव लोचन शाह तथा इस्लाम हुसैन जी ने कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

1.6 हल्द्वानी से देहरादून तकय सफल रही राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा

सर्वोदय जगत 1-15 जुलाई 22

हल्द्वानी से देहरादून तक; सफल रही राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा

उत्तराखंड का जनमानस अपने परम्परागत सद्भाव और भाईचारे की मिसाल खुद है। उत्तराखंड में सम्पन्न हुई 40 दिन की राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा में यह तथ्य बार बार देखने को मिला। सभी शांति चाहते हैं और अहिंसा पर टिके रहना उनका स्वभाविक गुण है। यह यात्रा सद्भावना के प्रसार के अपने उद्देश्य में सफल रही.

8 मई को उत्तराखंड में हल्द्वानी से आरंभ होकर सद्भावना यात्रा का 20 जून को देहरादून में समापन हुआ। इस यात्रा का मार्ग इस प्रकार निर्धारित किया गया कि उत्तराखंड के सभी जिलों और अंचलों में सद्भावना का संदेश पहुंचाया जा सके। यात्रा के दौरान पूरे समय सांस्कृतिक जुलूस निकाले गए, जिनका जबरदस्त प्रभाव स्थानीय जनता पर देखा गया। इस दौरान कुल 80 पड़ावों पर गोष्ठियां और नुक्कड़ सभाएं करते हुए यात्रा देहरादून पहुंची।

इस यात्रा ने जिस तरह राज्य के छोटे-छोटे कस्बों, गांवों, अंचलों, कस्बों, चोटियों और घाटियों को करीब 4500 किमी चल कर नापा है, वह यात्रा की सघनता को समझने के लिए काफ़ी है। इस बीच यात्रा का करीब 10 हजार लोगों से सम्पर्क हुआ, जिसमें करीब 800 लोग ऐसे थे, जिन्होंने यात्रा के दौरान कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय सहयोग किया।

यात्रा के दौरान उत्तराखंड के जिन जननायकों का ज़िक्र बार बार आया, उनमें वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का नाम प्रमुख है. वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली ने जिस तरह पेशावर के किस्साख्वानी बाजार में निहत्थे आंदोलनकारी पठानों पर गोली चलाने से इंकार किया था, वह सच्चाई और साहस की अद्भुत मिसाल है।

उत्तराखंड का भूगोल, जलवायु ओर सांस्कृतिक विविधता हमें एकता का संदेश देती है. उत्तराखंड में करीब डेढ़ दर्जन भाषा और बोली बोलने वाले हैं, जो आपसी सद्भाव से रहते हैं। यात्रा में सामाजिक, जातिगत और धार्मिक मुद्दों पर जन सामान्य से बातचीत करके वर्तमान परिस्थितियों में समन्वय और सद्भाव बढ़ाने पर बल दिया गया।

यात्रा में असंगठित मजदूरों व महिलाओं की स्थिति, किशोर-किशोरियों व युवाओं के मुद्दे, निराश्रित महिला पुरुषों के अलावा सड़कों और जंगलों में घूमते हुए निराश्रित पशुओं की दुर्गति पर भी चिंता व्यक्त की गयी। पलायन से खाली होते गांवों, प्राकृतिक संसाधनों और पशुधन की हिफ़ाज़त जैसे मुद्दों और मौजूदा हालात पर भी विचार विमर्श हुआ।

जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदेश में कृषि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बंजर होते खेतों और बगीचों की जमीनों पर बनने वाले रिजोर्ट और बड़े बड़े निर्माणों से स्थानीय संरचना पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की अपनी चिन्ताओं को लोगों ने यात्रीदल के साथ साझा किया। बागबानी, कृषि उत्पादन, फलोत्पादन, दुग्ध उत्पादन और स्वरोजगार के अच्छे प्रयोगों और अनुभवों को भी साझा किया गया।

यात्रा के दौरान सबसे प्रभावकारी नुक्कड़ सभाएं रहीं, जिनमें यात्रीदल ने विभिन्न विषयों पर आमजन से सम्भाषण किया। गोपाल भाई के जन गीतों से आरंभ होने वाली नुक्कड़ सभाओं में भुवन भट्ट, इस्लाम हुसैन और साहब सिंह सजवाण ने अपनी बात रखी. राज्य के आंदोलनकारी व जुझारू नेता पीसी तिवारी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सद्भावना के माहौल में ही राज्य का विकास हो सकता है। उत्तराखंड आंदोलनकारियों के लिए श्रद्धा का केन्द्र रहे गैरसैंण में राष्ट्रीय सद्भावना यात्रा का स्वागत करते हुए जुझारू नेता कामरेड इंद्रेश मैखुरी ने सभी विभाजनकारी और साम्प्रदायिक शक्तियों का मुकाबला करने का आह्वान किया।

पद्मश्री बसंती बहन ने अपने हर सम्बोधन में जल, जंगल, जमीन की लूट और नशे के बढ़ते प्रचलन को देश और प्रदेश के लिए घातक बताया और इसे रोकने की अपील की। कोसी नदी घाटी में किए गए उनके कार्यों व अनुभवों को सुना और सराहा गया। स्कूलों में छात्र छात्राओं को इस बात से ख़ास ख़ुशी हुई कि उनके बीच पद्मश्री से सम्मानित बसंती बहन पहुंची हैं।

प्लास्टिक कचरे के खतरे पर भी चर्चा हुई, लोगों का कहना था कि कचरे के कारण पहाड़ के सौंदर्य और पर्यावरण पर संकट आ गया है. सरकार के पास इस समस्या को दूर करने के लिए न दृष्टि है और न ही इच्छा है। यात्रा के अन्तिम पड़ाव देहरादून के पास यात्री दल खारखेत पहुंचा, जहां की खारी नदी में स्थानीय सत्याग्रहियों ने नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा था। यात्री दल ने वहां दांडी मार्च के सत्याग्रहियों को याद किया।

इस यात्रा में जो लोग सम्मिलित रहे, उनमें उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन, यात्रा संयोजक भुवन पाठक, चिपको आंदोलनकारी साहिब सिंह सजवाण, पद्मश्री बसंती बहन, उत्तराखंड आंदोलनकारी पीसी तिवारी, सामाजिक मुद्दों पर मुखर व आंदोलनकारी प्रभाव ध्यानी, सर्वोदय मण्डल से रीता इस्लाम, सुरेन्द्र बरोलिया, नरेंद्र कुमार, राजीव गांधी फाउंडेशन से विजय महाजन, परमानंद भट्ट, हिदायत आज़मी, जीत सिंह, लक्ष्मी, प्रयाग भट्ट, रजनीश और रेवा अरुण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

-सर्वोदय जगत डेस्क

Click here to watch full video of
Rashtriya Sadbhavana Yatra, Uttarakhand

Rashtriya Sadbhavana Yatra
Interview with Dr. Ravi Chopra

Click the link below to watch the video:

https://youtu.be/-WZjWUkuJAA

2 Part I: How to deal with the self?

2.1 अधिकार: महादेवी वर्मा

वे मुस्काते फूल, नहीं
जिनको आता है मुर्झाना,
वे तारों के दीप, नहीं
जिनको भाता है बुझ जाना;
वे नीलम के मेघ, नहीं
जिनको है घुल जाने की चाह
वह अनन्त रितुराज, नहीं
जिसने देखी जाने की राह;
वे सूने से नयन, नहीं
जिनमें बनते आँसू मोती,
वह प्राणों की सेज, नहीं
जिसमें बेसुध पीड़ा सोती;
ऐसा तेरा लोक, वेदना
नहीं,नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं, नहीं
जिसने जाना मिटने का स्वाद!
क्या अमरों का लोक मिलेगा
तेरी करुणा का उपहार?
रहने दो हे देव! अरे
यह मेरा मिटने का अधिकार!

- महादेवी वर्मा

2.2 Sri Dev Suman: The Hero of Garhwal

Born on 25 may 1916, in the village Jaul of Tehri Garhwal district of Uttarakhand, Sri Dev Suman was best known as a group leader of freedom fighters active in Tehri.

His father Shri Hari Dutt Badoni was a well known Vaidya (Practitioner of Ayurveda). His mother Shrimati Tara Devi was a housewife. Although Suman's real name was Shri Dutt Badoni however later on as he contributed in the revolution of freedom he was renamed as Sri Dev Suman.

He had his early education In Chamba and Tehri. In 1930 Sri Dev Suman was only 14 years old when he participated in "Namak Satyagraha" in Dehradun. And at that very time, he was arrested and sentenced to the imprisonment of 15 days in the Agra Central Jail. Where he wrote the following lines on our beloved motherland;

"आज जननी है उगलती, अग्नियुक्त अंगार माँ जी,
आज जननी कर रही है, रक्त का श्रृंगार मां जी।

इधर मेरे मुल्क में स्वाधीनता संग्राम मां जी,
उधर दुनिया मे मची है, मार काट महान मां जी।।"

In his early life, he became a key organizer and agitator for civil rights in Tehri while serving as an editor and writer for several underground publications, such as “Suman Saurabh” etc. He started to fight for the freedom of Tehri Riyasat from the clutches of the King of Garhwal Bolanda Badri (Speaking Badrinath).

Sri Dev Suman was highly influenced by Mahatma Gandhiji and used a Non-Violence way for the freedom of Tehri. His friend's circle included respected environmentalists and people with specific excellence.

In that very time, there were many kinds of objectionable taxes incorporated on the poor subjects of **Tehri Riyasat**. One day Sri Dev Suman went to his mother and eyes filled tears and said “Maa, Please forgive me! Your son cannot provide you all the luxury and happiness of life as I am devoted to my motherland. Please allow me to live for those mothers who haven’t any child”.

Sri Dev Suman was one of the first proponents of the unification of Uttarakhand. He was invited as a representative of the hills; to a conference held in February 1939, which was presided by Pandit Jawahar Lal Nehru in Ludhiana.

At this meet, the atrocities that were inflicted on the poor people by the Garhwal Rulers were brought into the knowledge of Vijay Laxmi Pandit and Pandit Jawahar Lal Nehru. In 1942 Sri Dev Suman went to Wardha to visit Mahatma Gandhi Ji.

He was very keen to seek Blessings from his idol for the **Praja-Mandal** movement. On returning to Tehri he was arrested by the soldiers of Garhwal who had been trailing him. He was barred to enter the Tehri state and was arrested every time whenever he tried to do so.

However the enthusiasm in his heart was constantly increasing, therefore he vowed to fight against the ruthless administrators even at the cost of his life. On 27December1943 when he was trying to enter into the Kingdom of Tehri, he was arrested at Chamba.

He was declared a rebel of the state and imprisoned. Inside the Jail heavy fetters were put on his body, disabling him from doing his daily Chores. And even with such tortures in his body, his food was not even eatable.

The Roti was prepared with a mixture of sand and clay, and the rest of the food was contaminated by grind pebbles. Mohan Singh was the in-charge of the jail and he never missed an opportunity to misbehave and torture Sri Dev Suman.

Then the courageous and devoted Sri Dev Suman decides to give up the food which was served to him by the cruel Administration. Consequently, the health of Sri Dev Suman deteriorated. The jail staff tried to feed him forcibly but all efforts of them brought no success.

Meanwhile, one night the mercury was low due to the winter and that worsened Suman's condition. Even though Sri Dev Suman’s health was not good; the jail staff hadn’t shown compassion towards him. His blanket happened to be soaked in cold water during the chilly winter nights that could have frozen our soul.

In that prison, Sri Dev Suman was anguished in many ways. On 3 May 1944, Sri Dev Suman started declining food and by July he was very critical. He was asked to give up his resolution and eat something for life.

Nevertheless, Sri Dev Suman was firm on his bold move as he believed that there is something more important than merely breathing. As his health worsened to the worst the doctors couldn't help and they tried to inject the medicine through intravenous which subsequently became the reason for his death.

Being imprisoned for 209 days and not eating for 84 days ultimately caused him to breathe his last. He was an ideal son for his parents, a loving brother to his friends. Sri Dev Suman's personality was as dynamic as his deeds which have shown his conscientiousness towards his convictions and beliefs.

As the authorities came to know that Sri Dev Suman is no more; they feared a public rebel as Sri Dev Suman was a loving son to the Tehri and its people. And hence the Jail authorities decided not to disclose the death of Sri Dev Suman. They packed the mortal remains of Sri Dev Suman in a cotton bag and threw it into the Bhilangana River.

This heinous act of jail authorities ultimately came into the knowledge and the people of Tehri went wild on his death.

He was a doctor by profession and Martyred only at the age of 29, leaving behind his wife and a legacy of inspiration for the people like us.

His Balidan Diwas (The Day of Martyrdom) is celebrated 25th of July.

Source- *Sri Dev Suman: The Hero of Garhwal (theindianhawk.com)*

2.3 चन्द्र सिंह गढ़वाली

23 अप्रैल 1930, पेशावर के सदर बाजार के काबुली गेट पर पठानों की भीड़ लगी हुई थी। सबके चेहरों पर एक शिकन तो थी। लेकिन कोई खास ख़ौफ़ नहीं दिखता था। पेशावर के आसमान में सूरज अभी चढ़ ही रहा था, लेकिन माहौल में तनाव और कुछ अनिष्ट हो जाने का डर पसरा हुआ था। चौराहे के दूसरी ओर अभी-अभी एक गोरे सार्जेंट पर किसी ने पेट्रोल की बोतल दे मारी थी। वो सार्जेंट जब जलने लगा तो वहां तैनात अंग्रेज़ अधिकारी कैप्टन रिकेट ने सिपाहियों को उसे बचाने का आदेश दिया। लेकिन कोई भी भारतीय सिपाही आगे नहीं बढ़ा। उल्टा सभी सिपाहियों ने मुँह फेर लिया। सार्जेंट जब जल कर मर गया, तो ग़ुस्से से तमतमाए कैप्टन रिकेट ने चार जवानों को धक्का मारते हुए आदेश दिया, 'जाओ उसे ले आओ।' सिपाही मौके पर पहुंचे और गोरे सार्जेंट को खींच लाए।

इस घटना के बाद पेशावर के पठान ये भांप चुके थे कि अंग्रेजी हुकूमत इस हत्या का बदला ज़रूर लेगी। पठानों की ये आशंका अगले कुछ घंटों में ही सही भी साबित होने वाली थी। अंग्रेजों ने रॉयल गढ़वाल राइफ़ल्ज़ की पूरी ब्रिगेड को पेशावर के चप्पे-चप्पे में तैनात कर दिया। मंसूबे ये थे कि जब गढ़वाली सिपाही निहत्थे पठानों पर गोली चलाएंगे तो इससे हुकूमत को दो फायदे होंगे। पहला ये कि पठानों का जनसंहार हुकूमत के ख़िलाफ़ उठने वाली हर आवाज़ को ख़ौफ़ज़दा कर देगा और दूसरा ये कि हिंदू सिपाहियों द्वारा पठानों पर चली गोलियां दो धर्मों के बीच बन रही नफरत की खाई को और भी चौड़ा कर देगी।

अंग्रेज अधिकारियों ने गढ़वाल रेजिमेंट की प्लाटून चार को पठानों के नरसंहार के लिये चुना। इस प्लाटून की कमान एक ऐसे गढ़वाली सूबेदार के हाथ में थी, जो कुछ मिनट बाद ही पूरी ब्रितानिया सल्तनत की जमीन हिलाने वाला था, जो पूरी दुनिया के क्रांतिकारियों के लिए एक आदर्श बनने वाला था, जिसका नाम स्वतंत्रता आंदोलन में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज होने वाला था और जो कुछ साल बाद आज़ाद भारत की एक गुलाम रियासत में पहली सशस्त्र क्रांति का नेतृत्व करने वाला था. ये नाम था, चंद्र सिंह भंडारी, जिसे इतिहास ने चंद्र सिंह गढ़वाली के रूप में याद रखा।

गढ़वाल राइफ़ल्ज़ ने पेशावर में अपने देशवासियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था। पूरी दुनिया में इस घटना का जबरदस्त असर हुआ. जो साहस और जज़्बा चंद्र सिंह गढ़वाली ने पेशावर में दिखाया था, उस साहस की झलकियां उनमें बचपन से ही दिखने लगी थी। अपनी बलशाली देह और हिम्मत के चलते उन्हें छोटी उम्र में ही गांव के लोग एक भड़ की तरह पहचानने लगे थे। उत्तराखंड के पहाड़ों में भड़ उस व्यक्ति को कहते हैं, जो असामान्य रूप से बलशाली होता है।

ऐसे ही एक भड़ का जन्म 25 दिसंबर 1891 को चमोली जिले में चांद पुर गढ़ी के नज़दीक रोणौसेरा गांव में काश्तकार जाथली सिंह के घर पर हुआ। जाथली सिंह अनपढ़ थे. उनका सामाजिक दायरा भी ऐसा नहीं था कि वो शिक्षा की जरूरत कभी महसूस कर पाते। इसका ख़ामियाज़ा चंद्र सिंह को भुगतना पड़ा। तेज दिमाग का होने के बावजूद भी उन्हें शुरूआती दिनों में स्कूल नहीं भेजा गया। लेकिन जब चंद्र सिंह की पैरवी करने खुद स्कूल के मास्टर जाथली सिंह के घर आए तो उन्होंने फिर रोका भी नहीं और इस तरह चंद्र सिंह की स्कूली पढ़ाई शुरू हुई। बताते हैं कि चंद्र सिंह भले ही पढ़ाई में अव्वल थे, लेकिन दुस्साहस उनमें भड़ों वाला ही था।

एक क़िस्सा खुद चंद्र सिंह ने कभी महान घुमक्कड़ राहुल सांकृत्यायन को सुनाया था। राहुल अपनी किताब में इस बात का जिक्र करते हुए लिखते हैं कि चंद्र सिंह उस समय सिर्फ़ 13 साल के थे जब गढ़वाल का कोई डिप्टी कमिश्नर अपनी पत्नी के साथ देडोविनसर के जंगलों में शिकार खेलने पहुंचा. पूरा गांव उसकी खिदमत में जुट गया। जितना हो सकता था आवभगत की गई। इस दौरे में आए डिप्टी कमिश्नर और उनकी पत्नी गांव के पास ही मौजूद डाक बंगले में ठहरे हुए थे। अगले दिन अंग्रेज साहब शिकार के लिए जंगल चले गए तो अंग्रेज मेम बंगले में ही अकेले रह गई। इस दौरान एक ऐसी घटना हुई, जिससे पूरे गांव की शामत आने वाली थी। हुआ यूं कि गांव का एक मानसिक विक्षिप्त व्यक्ति नग्न अवस्था में बंगले के सामने से गुजर गया। जिस वक्त वो वहां से निकल रहा था उस वक्त अंग्रेज मेम बंगले के बाहर ही टहल रही थी। उन्होंने उस नग्न व्यक्ति को देखा तो इसे अपना अपमान माना।

डिप्टी कमिश्नर शिकार करके वापस लौटे तो उनकी पत्नी ने उन्हें इस बारे में बताया। गांव के सभी पुरूषों को अंग्रेज मेम के सामने शिनाख्त परेड के लिए तलब कर लिया गया। लेकिन आरोपी की पहचान न सकी। लिहाजा, पूरे गांव को ही पौड़ी में डिप्टी कमिश्नर की अदालत में हाजिर होने का हुक्म सुना दिया गया। गांव वाले पौड़ी पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि साहब की अदालत अब जोशीमठ से आगे नीति घाटी में लगेगी। बेचारे गांव वाले खाने की चीजें पीठ पर लादे कई दिनों के पैदल सफर के बाद नीति पहुंचे। वहां एक नया फरमान सुना दिया गया कि इस मुकदमे की सुनवाई तो वही मेम करेगी और वो इस वक्त पौड़ी में हैं।

ज्यादातर गांव वालों की जेब खाली हो चुकी थी। लेकिन मरते क्या न करते। कुछ लोगों को वापस गांव रवाना किया गया, चंदा जुटा कर पैसा मंगवाया गया और एक बार फिर से एक लंबा सफर तय करते हुए ये लोग दोबारा पौड़ी पहुंचे। बेहद घबराए हुए कि अंग्रेज मेम न जाने क्या सजा सुना दे।

रोणौसेरा गांव के इन लोगों के बीच गौरी दत्त नाम का एक व्यक्ति अपने जादू टोने के लिए मशहूर था। उसने इस समस्या का समाधान बताते हुए चूल्हे, ओखल और चक्की की मिट्टी के साथ कुछ अन्य चीजें मिलाई और एक पुड़िया में इन्हें बांधकर एलान कर दिया कि अगर मंत्र चढ़ी इस पुड़िया की राख अंग्रेज अधिकारी के सिर पर उड़ेल दी जाए तो उसका दिमाग बदल जायेगा और सभी लोग सजा से बच निकलेंगे। अब संकट ये था कि बिल्ली के गले में घंटी बांधेगा कौन। जब कोई भी इसके लिए तैयार नहीं हुआ तो 13 साल के चंद्र सिंह ने आगे आ कर ये जिम्मेदारी ली।

सुनवाई का दिन आया तो डिप्टी कमिश्नर के आवास पर अदालत बैठी जिसमें वो और उनकी पत्नी दोनों, बतौर जज शामिल हुए। अपराधी के तौर पर पूरा गांव मौजूद था लिहाज़ा अदालत में काफी भीड़ थी। इसी भीड़ के बीच से निकलकर चंद्र सिंह ने मौक़ा देखते ही वो राख की पुड़िया दोनों जजों के सिर पर झाड़ दी। न तो जजों को और न ही वहाँ खड़े चपरासियों को इस बात भी भनक लगी। इत्तिफ़ाक़न हुआ भी ये कि डिप्टी कमिश्नर और उनकी पत्नी ने गांव वालों को पांच रुपए के मामूली जुर्माने की सजा सुनाते हुए छोड़ दिया। ये सुनते ही गांव वालों ने चंद्र सिंह को अपने कंधे पर उठा लिया। अंग्रेज अधिकारी और उसकी पत्नी ये देख असमंजस में डूब गए। उन्हें समझ ही नहीं आया कि जब फैसला उन्होंने सुनाया तो जय जयकार भी उन्हीं की होनी चाहिए थी लेकिन गांव वाले इस 13 साल के बच्चे को क्यों धन्यवाद कह रहे हैं। उस अंग्रेज परिवार के लिए ताउम्र ये बात एक रहस्य ही रही। चंद्र सिंह के जीवन के ऐसे ही कई क़िस्सों का जिक्र राहुल सांकृत्यायन की लिखी किताब 'वीर चंद्र सिंह गढ़वाली' में मिलता है।

बहरहाल, इस घटना के कुछ साल बाद यूं हुआ कि चंद्र सिंह वो घर से भाग कर लैंसडाउन पहुंचे और रॉयल गढ़वाल में भर्ती हो गए। ये वो समय था जब प्रथम विश्व युद्ध अपने चरम पर था। अपने लालच के चलते क़ब्ज़ाए गए कई देशों को बचाने के लिए अंग्रेजों ने गढ़वालियों को भी सेना में भर्ती करना शुरू किया। गोरखाओं की तरह ही अंग्रेज़ गढ़वालियों को भी मार्शल ब्रीड मानते थे। लिहाजा, उन्होंने ज्यादा से ज्यादा गढ़वालियों को फौज में भर्ती किया और उन्हें प्राथमिक प्रशिक्षण देकर सीधे फ्रांस के मोर्चे पर झोंक दिया।

पूरी दुनिया दो हिस्सों में बंट रही थी। दूसरे देशों की जमीन और संसाधनों पर क़ब्ज़े के लिए करोड़ों लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा था। युद्ध के एक धड़े में इंग्लैंड भी था और क्योंकि भारत उसका गुलाम देश था, तो लाजमी है कि उसके गुलाम सैनिकों को उसके लालच की क़ीमत चुकानी थी। यही क़ीमत चुकाने के लिए गढ़वाल राइफ़ल्ज़ को भी फ्रांस के मोर्चे पर भेजा जाना तय हुआ। इस युद्ध में जाने वाले सैनिकों के जीवित वापस लौटने की उम्मीद कम ही होती थी। लिहाज़ा उन्हें जाने से पहले कुछ छुट्टियाँ दी जाती थी ताकि वो अपने परिवार से मिल सकें और ऐसे मिल सकें जैसे ये उनकी आख़िरी मुलाक़ात हो। फ़्रांस के मोर्चे पर निकलने से पहले चंद्र सिंह को भी 15 दिन की छुट्टी मिली। सैनिक वर्दी पहने जब वो अपने गांव पहुंचे तो पहली बार अपनी सात महीने की बेटी से मिले और उसे देखते ही ऐसे पिघल गए कि फूट फूट कर रोने लगे। वो एक ऐसे मोर्चे पर निकल रहे थे कि अपनी बेटी से उनकी ये पहली मुलाक़ात, आख़िरी भी हो सकती थी।

15 दिन अपने परिवार के साथ रहने के बाद चंद्र सिंह वापस अपनी पलटन में लैंसडाउन लौटे। यहां से एक महीने बाद उनकी पलटन फ़्रांस के लिए रवाना हुई। लैंसडाउन से कोटद्वार रेलवे स्टेशन तक ये पलटन पैदल पहुंची, कोटद्वार से बंबई ट्रेन से और 1 अगस्त 1914 के दिन कोकनाडा जहाज में सवार हो गई। भूमध्य सागर में एक लंबा सफर करते हुए 14 अगस्त को ये लोग फ्रांस के मारसेई बंदरगाह पहुंचे और फिर जर्मनों के खिलाफ इन गढ़वाली सैनिकों ने अदम्य साहस का परिचय दिया। चंद्र सिंह फ्रांस के उसी मोर्चे पर लड़ रहे थे, जिसमें दो महीने पहले ही टिहरी जिले के गबर सिंह नेगी और चमोली जिले के दरबान सिंह लड़े थे जिन्हें आगे चलकर विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया था।

कई महीनों तक फ्रांस के मोर्चे पर लड़ने के बाद चंद्र सिंह को इराक़ और मध्य पूर्व के कई अन्य मोर्चों पर भेजा गया। वो जब भारत वापस लौटे तो कई देशों की यात्रा कर चुके थे। उनके अनुभवों का दायरा इसलिए भी ज़्यादा विस्तार पा चुका था क्योंकि इसी बीच चंद्र सिंह को किताबों का भी चस्का लग चुका था। वो जिन्हें पढ़ रहे थे उनमें रूस की क्रांति के नायक समाजवादी नेता लेनिन भी शामिल थे। लेनिन की सोच और समाजवाद ने चंद्र सिंह को काफी प्रभावित किया था और भारत लौटने तक वो ये समझ चुके थे कि वो जिस युद्ध में वो लड़े और उनके सैकड़ों साथी शहीद हुए, वो महज एक लालच का युद्ध था, जिसमें उनके देश के नजाने कितने लोगों को बली का बकरा बनाया गया था।

ये वो दौर भी था जब भारत में असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था। ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ महात्मा गांधी के प्रतिरोध का अनोखा तरीक़ा जहां दुनिया भर में लोगों का ध्यान खींच रहा था, वहीं देश की सरहदों में भी यह प्रतिरोध की नई ऊर्जा का संचार कर रहा था। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम में अफ़गानिस्तान की सीमा से लगे इलाक़े में एक और गांधी उभर रहे थे जिनका नाम था अब्दुल गफ़्फार ख़ान।

गफ़्फ़ार ख़ान के नेतृत्व में पठानों ने अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ सत्याग्रह की शुरुआत और वो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को और मज़बूती दे रहे थे। सीमांत गाँधी यानी अब्दुल गफ़्फार ख़ान से प्रेरित कई पठान, गांधी जी के समर्थन में एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन के लिए जमा हुए थे। अंग्रेज़ी हुकूमत को ये बर्दाश्त नहीं हुआ. वो किसी भी क़ीमत पर पठानों के इस आंदोलन को कुचल देना चाहती थी।

पेशावर में आंदोलन कर रहे पठानों को चारों तरफ से घेर लेने के बाद कैप्टन रिक्केट ने घोषणा की, 'तुम लोगों को ये आख़िरी चेतावनी दी जा रही है। अगर इसके बाद भी तुमने ये सभा ख़त्म नहीं की तो गोलियों से भून दिए जाओगे।' अंग्रेज़ी कप्तान रिक्केट की इस धमकी का भी जब पठानों पर कोई असर नहीं हुआ तो उसने चीखते हुए गढ़वाली सैनिकों को आदेश दे दिया, 'गढ़वालीज 'थ्री राउंड फ़ायर!'।

गढ़वाली सैनिक इस आदेश की तामील करते, लेकिन उससे पहले ही कैप्टन रिक्केट के ठीक बाईं ओर खड़े सूबेदार चंद्र सिंह भंडारी गरजते हुए बोले, 'गढ़वाली सीज़ फ़ायर. गढ़वाली गोली मत चलाना' इतना सुनना था कि सभी गढ़वाली सैनिकों ने अपनी बंदूक़ें नीचे कर ली और निहत्थे पठानों पर गोलियां चलाने से इनकार कर दिया।

इस बग़ावती क़दम के लिए जब कोर्ट मार्शल का दौर चला और गढ़वालियों से उनकी नाफ़रमानी की वजह पूछी गई तो उन्होंने दो टूक जवाब दिया, 'सेना का काम दुश्मनों से लड़ना है, अपने ही देश के नागरिकों पर गोली चलाना नहीं।'

गढ़वाली जवानों के इस अभूतपूर्व क़दम ने जहां ब्रितानिया हुकूमत को अंदर तक हिला दिया, वहीं इस पेशावर कांड ने सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों को एक नई उम्मीद से भर दिया।

इस घटना के बाद चंद्र सिंह गढ़वाली समेत पूरी आठ सौ गढ़वालियों की पलटन से हथियार वापस ले लिए गए। अंग्रेजों ने इन सभी को पेशावर से हटाना जरूरी समझा और रात के अंधेरे में ही इन्हें ट्रेन में चढ़ा दिया गया। जिस वक्त ये गढ़वाली सैनिक ट्रेन में चढ़ रहे थे, उसी वक्त वहां पर एबटाबाद छावनी से चली गोरखा राइफल के जवानों से भरी एक ट्रेन आकर रूकी। गढ़वालियों को समझ आ गया था पठानों पर गोलियां चलने के जिस काम से उन्होंने इनकार कर दिया था, उसके लिए अब गोरखा सैनिकों को बुलाया गया है। इसकी भनक लगते ही चंद्र सिंह गढ़वाली ने जोर-जोर से आहवान करते हुए कहा, 'गोरखा भाइयों. हम सब भाई-भाई हैं। अंग्रेज हमसे गोलियां चलवाकर हमारे ही देशवासियों को मरवाना चाहते हैं। तुम ऐसा मत करना'। चंद्र सिंह के साथ ही तमाम गढ़वाली सैनिकों ने जब ये बात दोहराई तो पूरा रेलवे स्टेशन गूंज उठा।

अंग्रेज़ सिपाही वहां पहुंचे और गढ़वाली सैनिकों को गोरखाओं से दूर किया गया। लेकिन पेशावर की जिन बैरकों में गढ़वाली पलटन रहती थी, उन्हें छोड़ते वक्त भी गढ़वाली सिपाहियों ने दीवारों पर कोयलों से हिंदी और रोमन में पेशावर कांड की पूरी कहानी लिख दी थी। साथ ही कसम लिखी थी कि जो भी हिंदू या मुसलमान पलटन यहां आए, वो निहत्थे पठानों पर गोली न चलाए। इस रणनीति का जबरदस्त असर हुआ। गोरखा सैनिक सोच में पड़ गए और शक के दायरे में आने से अंग्रेजों ने उन्हें भी पेशावर से वापस भेज दिया।

चंद्र सिंह के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम गढ़वाल राइफ़ल्ज़ उठा चुकी थी। कोर्ट मार्शल शुरू हुआ तो चंद्र सिंह समेत 16 अन्य आरोपियों का मुकदमा बैरिस्टर मुकुंदी लाल ने लड़ा। पहले ये तय था कि इन सभी को अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ बगावत करने की सजा बतौर फांसी दी जायेगी। लेकिन कोर्ट ने इन सभी को आजीवन कारावास की सजा मुकर्रर की।

चंद्र सिंह गढ़वाली के जीवन में फौज का अध्याय अब खत्म हो चुका था, लेकिन इसके साथ ही अब उनका जीवन राजनीतिक, सामाजिक और आंदोलनकारी के रूप में तरमीम होने वाला था। एक ऐसा जीवन जिसमें महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू और सरदार बल्लभ भाई पटेल जैसे बड़े नेताओं की शागिर्दी लिखी थी। वहीं दूसरी ओर अपने ही लोगों द्वारा उन्हें वो तमाम दुख भी मिलने वाले थे, जिसके हक़दार वो क़तई नहीं थे।

चंद्र सिंह को हुई आजीवन कारावास की सजा की शुरुआत एबटाबाद की जेल से हुई जहां वो छह साल रहे। इसके बाद दो साल बरेली जेल में और फिर चार साल देश की अलग-अलग जेलों में। जेल में सजा काटने के दौरान उनके विचारों में भी परिवर्तन की प्रक्रिया भी सतत जारी रही। इसमें सबसे बड़ा पड़ाव तब आया जब इलाहबाद की नैनी जेल उनकी मुलाक़ात शिव वर्मा, जयदेव कपूर, डा गया प्रसाद, शम्भू प्रसाद, विजय कुमार और यशपाल जैसे क्रांतिकारियों से हुई. इन लोगों की संगत में आकर चंद्र सिंह अब पूरी तरह से साम्यवादी हो गए।

सरकार को इस संगत का पता चला तो उन्हें 10 नवंबर 1939 के दिन देहरादून जेल में शिफ़्ट कर दिया गया। कुछ समय बाद जब उन्हें लखनऊ जेल भेजा गया तो उनकी मुलाकात राजनैतिक कैदी पंडित जवाहर लाल नेहरू से हुई। दोनों लगभग 42 दिन एक दूसरे के अगल बगल रहे। चंद्र सिंह को पंडित नेहरू प्यार से बड़े भाई कहा करते थे। ये ही नाम बाद में उनका प्रसिद्ध भी हुआ।

जेल से छूटने के बाद कई साल चंद्र सिंह ने पंडित नेहरू, गोविंद बल्लभ पंत और महात्मा गांधी के सानिध्य में काम किया। वो कई बार इन बड़े नेताओं की बातों से असहमत होते हुए देश के लिये क्रांतिकारी रास्ते को जरूरी बताते थे। इसका नुक़सान ये हुआ कि उन्हें कई अहम राजनीतिक समितियों से भी अलग-थलग कर दिया गया।

अंग्रेजों ने उन्हें जेल से तो छोड़ दिया था लेकिन उनके पौड़ी जाने पर प्रतिबंध था। ये प्रतिबंध तभी हटा जब देश आजाद हुआ। उसके बाद वो पौड़ी में ही जनता के मुददे उठाने लगे। लेकिन इसी बीच एक और अहम घटना हुई जिसके चलते वो फिर से पूरे देश के सामने एक बड़े क्रांतिकारी के रूप में सामने आए। ये घटना थी आजाद भारत में टिहरी नाम की एक रियासत में सशस्त्र क्रांति की अगुवाई करना।

राहुल सांकृत्यायन अपनी किताब 'वीर चंद्र सिंह गढ़वाली' में लिखते हैं, 'श्रीनगर में अलकनंदा के दूसरी ओर कीर्तिनगर से टिहरी रियासत की सीमा शुरू होती थी। यहां टिहरी के राजा के खिलाफ आंदोलन कर रही प्रजा परिषद के कुछ नेताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। इससे जनता में भारी गुस्सा था। इसकी सूचना जब कामरेड नागेंद्र सकलानी और मोलू भरदारी को मिली तो वे तुरंत मौके पर पहुंचे। सकलानी ने पहुंचते ही भोंपू पर बोलना शुरू किया और फिर सभा की शुरुआत हुई। इसके कुछ ही समय बाद कीर्तिनगर की कचहरी पर अधिकार कर लिया गया और कस्बे में जनता की सरकार स्थापित होने की घोषणा कर दी गई। राजा के अधिकारियों को जनता ने बंधक बना लिया। टिहरी के राजा नरेंद्र शाह उस वक्त टिहरी में अपने महल में थे। उन्हें इसकी सूचना मिली तो उन्होंने एसडीओ और पुलिस अधीक्षक को भारी पुलिस बल के साथ मौके पर रवाना किया। लेकिन जनता अब क्रांति का मोर्चा संभाल चुकी थी। तमाम सिपाही बंधक बना लिए गए थे। एसडीओ और पुलिस अधीक्षक ने ये नजारा देखा तो वे जंगल की ओर भागे। नागेंद्र सकलानी और मोलू भरदारी उनके पीछे भागे तो एसडीओ ने दोनों पर गोली चला दी। दोनों क्रांतिकारियों की वहीं शहादत हो गई'।

नागेंद्र सकलानी और मोलू भरदारी की शहादत की खबर सुनकर जनता मायूस होने लगी। लेकिन क्रांति दिशाहीन न हो, इसके लिये पेशावर कांड के नायक चंद्र सिंह गढ़वाली तुरंत पौड़ी से कीर्तिनगर पहुंचे। उन्होंने एक भोंपू अपने हाथ में लिया और जनता से बोले, 'मैं चंद्र सिंह गढ़वाली हूं। नागेंद्र सकलानी और मोलू भरदारी की शहादत हमारी अंतिम शहादत हैं। गढ़वाल में तेरह सौ साल का ये सामंती गढ़ अब इन शहादतों के सामने टिक नहीं पाएगा।'

चंद्र सिंह गढ़वाली आहवान कर ही रहे थे कि वहां मौजूद पुलिस के सभी सिपाहियों ने अपने हथियार झुका लिए और इस जन-क्रांति में शामिल हो गए। तय किया गया कि दोनों शहीदों के शवों को एसडीओ की गाड़ी में रख कर टिहरी की तरफ़ कूच किया जाए. क्रांतिकारियों का ये क़ाफ़िला देवप्रयाग होते हुए 15 जनवरी को टिहरी पहुंचा। गांव-क़स्बे-बाजार जहां-जहां से भी ये यात्रा गुजरी, पुलिस के सिपाही अपने हथियार डालते गए और जनता घरों से निकल कर इस जुलूस का हिस्सा बनती चली गई। क्या बुजुर्ग, क्या नौजवान, क्या महिलायें और क्या बच्चे। सभी टिहरी की तरफ बढ़ने लगे। 15 जनवरी को क़ाफ़िला टिहरी पहुंचा। अब तक इस क़ाफ़िले में हथियारबंद सुरक्षाकर्मी भी शामिल हो चुके थे। ये वही हथियारबंद सुरक्षाकर्मी थे, जो कभी गढ़वाल राइफल के योद्धा थे और बाद में आजाद हिंद फौज में शामिल हो गए थे। इन्हें पता चला कि उनका नेता चंद्र सिंह गढ़वाली इस क्रांति का नेतृत्व कर रहा है तो वो सभी अपने हथियार लेकर एक सुरक्षा प्लाटून के रूप में क्रांति के भागीदार हो गए थे।

टिहरी में एक सफल क्रांति हुई और रियासत को आज़ाद करवाते हुए उसका भारत संघ में विलय करवाया गया। इसके बाद चंद्र सिंह पौड़ी लौट आए लेकिन यहां उनके साथ एक ऐसी घटना हुई, जिससे वो अंदर तक टूट गए। उन्हें आजाद भारत की पुलिस ने गिरफतार कर लिया और बरेली जेल भेज दिया गया।

चंद्र सिंह गढ़वाली ये भी नहीं जानते थे कि उन्हें किस आरोप में गिरफ़्तार किया गया है। उन्होंने खुद पर लगी धाराओं के बारे में उत्तर प्रदेश सरकार से पूछा। उस समय उत्तर प्रदेश सरकार में मुख्यमंत्री गोविंद बल्लभ पंत हुआ करते थे। वे पहले से ही चंद्र सिंह से परिचित थे। डेरा इस्माइल खां जेल में जब चंद्र सिंह ने कैदियों की मांग को लेकर भूख हड़ताल की थी तो गोविंद बल्लभ पंत ने ही जूस पिलाकर उनकी हड़ताल तुड़वाई थी। ऐसे में, चंद्र सिंह बरेली जेल में आश्चर्य में थे कि उन्हें आखिर क्यों जेल में डाल दिया गया है, वो भी तब जब भारत आजाद हो चुका है। जेल में रहते हुए जब उन्हें एक हफ़्ता बीत गया राज्य के गृह सचिव का पत्र उन्हें मिला. उसमें जो लिखा था, वह पढ़कर चंद्र सिंह गढ़वाली के पैरों तले जमीन खिसक गई। उस पत्र में लिखा था कि 'यूपी मेन्टेनेन्स आफ पब्लिक आर्डर एक्ट 47 की धारा पांच के तहत तुम चंद्र सिंह, बेटा जाथली सिंह, मौजा अकरोड़ा, जिला गढ़वाल को इत्तिला दी जाती है कि तुम्हें नजरबंद रखने की वजह है कि तुम कम्युनिस्ट पार्टी के जोरदार कार्यकर्ता हो। दूसरा, कि गढ़वाल राइफल की पेशावर में हुई गदर के सजायाफता हो। तीसरा, कितुम लोगों को भड़काते रहते हो।' ये पत्र पढ़कर चंद्र सिंह का दिल बैठ गया और उनकी आंखें भर आई। उन्होंने जेल की अपनी कोठरी में दो पल के लिए सोचा कि इस देश की आज़ादी के लिए मैंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया, एक लंबा जीवन जेल में काटा, वो देश जब आज़ाद हुआ तो उन्हें ये सम्मान दिया जा रहा है।

चंद्र सिंह गढ़वाली को जेल में नजरबंद रखने की जानकारी जब देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को हुई तो उन्होंने बड़ा अफसोस जताया। हालांकि उन्हें भी ये बात तब पता चली जब लंदन के बड़े अखबार डेली वर्कर ने चंद्र सिंह के जेल जाने की खबर को बड़ी प्रमुखता से प्रकाशित किया। उसके बाद भारत के अन्य अखबारों में भी जब यूपी सरकार की जमकर आलोचना हुई तो नेहरू और गोविंद बल्लभ पंत के दखल के बाद उन्हें रिहा किया गया।

चंद्र सिंह गढ़वाली का शेष जीवन भी बहुत बड़ी आर्थिक तंगी में गुजरा। उनके परिवार की आर्थिक हालत इस कदर खराब हो चुकी थे कि वो अपने बच्चों की पढ़ाई की फीस भी नहीं दे पाते थे। बाद में उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें 15 रूपये मासिक पेंशन देने की घोषणा की। 74 साल की उम्र में ये पेंशन की रकम जले पर नमक छिड़कने जैसा था। इसलिये उन्होंने कभी ये पेंशन स्वीकार नहीं की। साल 1957 में चंद्र सिंह गढ़वाली ने कम्युनिस्ट पार्टी के सिंबल पर चुनाव भी लड़ा लेकिन वो जीत नहीं सके। एक अक्टूबर 1979 के दिन लंबी बीमारी के बाद उनका देहांत हो गया। उनकी मौत के बाद भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया और उत्तराखंड सरकार में कुछ योजनाएँ और कुछ संस्थाएँ आज भी उनके नाम से चलाई जा रही हैं।

स्क्रिप्ट : मनमीत

Source- *'वीर चंद्र सिंह गढ़वाली' जिसे अंग्रेज़ों ने ही नहीं, आज़ाद भारत ने भी राजद्रोही कहा. - Baramasa*

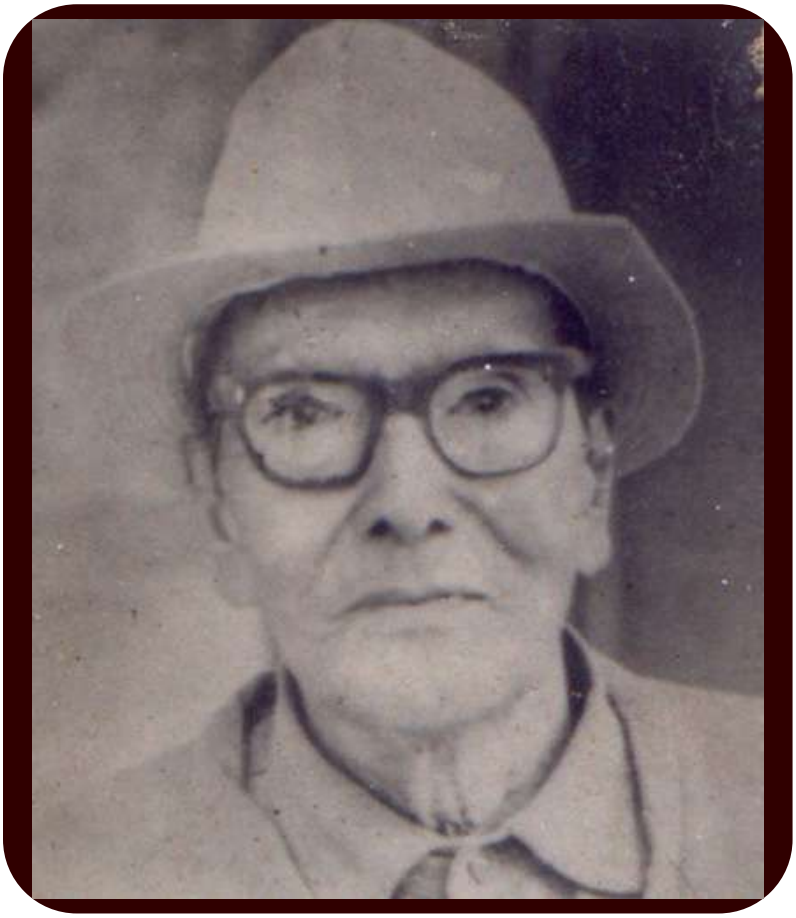

2.4 Sarla Behn– The Comrade of Gandhi, Social Reformer, and an Ardent Environmentalist

By Bharat Dogra

English Gandhian Social Activist Sarala Behn

Sarla Behn was a British lady who made India her home and went to jail while participating in the freedom struggle of India in Uttarakhand. In her last years in India she had emerged as a motherly figure for Gandhian social activists in Uttarakhand, an inspirer of the famous chipko movement. Leading social and environmental activists of Uttarakhand like Vimla and Sunderlal Bahuguna and Radha Bhatt remember her as their teacher and inspirer.

Born Catherine Mary on April 5 in 1901 in Britain, she was known to be a brilliant student. She excelled in her early work opportunities, but longed for a more fulfilling life. Her quest for a higher aim in her life brought her to Vidya Mandir in Udaipur, India. Here her earlier work for educational reform in tune with Gandhiji's ideas brought her in contact with Mahatma Gandhi, several stalwarts of freedom movement and its various related constructive activities. In education reform she worked closely with the family of Naayakam and Asha with whom she formed a lasting relationship.

Sarla Behn museum in Kausani, Uttarakhand

She was selected to work for hand spinning and hand weaving of wool (woolen khadi) with Gandhi Ashram in Almora district. Here she worked in close cooperation with Shantilal Trivedi, a Gandhian activist whose ribs and leg bones had been broken in a lathi charge at the time of the participation in flag satyagraha. He always worked beyond his physical capacity and suffered several physical infirmities. Yet he always worked with great zest and also a strong sense of humour. Shantilal and Sarla not only succeeded in ensuring good progress of khadi work but also helped to increase the team of devoted freedom movement activists in this region.

As Sarla Behn travelled to remote villages in Himalayan region with Shantilal, she was happy to see that the Gandhian freedom movement had also spread here and satyagarhi freedom fighters could be seen in good members in most places.

Around 1941-42 a decision was taken that Sarla Behn will guide a school in Kasauni where daughters of freedom fighters can study. This was also the time when the freedom movement was intensifying in a big way with the call of ‘Quit India’. Sarla Behn was drawn more and more into the centre of freedom movement activities in Uttarakhand. She worked in adverse conditions to resist the grave injustice being done to several freedom fighters. She visited families of arrested freedom fighters to arrange help and boost their morale. The government was going to the extent of auctioning the farms of freedom fighters.

Sarla Behn portrait in Museum, Kausani, Uttarakhand

Shantilal was arrested . Sarla Behn was first detained at Kasauni Ashram and later arrested. The jail life had many hardships, yet those who met her at court appearances were surprised at the peace and tranquility on her face and in her interactions.

After her release Sarla Behn continued to be active in freedom movement and helping families of freedom fighters. Towards the end of 1944 she was arrested again and kept in Almora and Lucknow jail, then shifted back to Almora. Jawaharlal Nehru spoke in several speeches against the ill-treatment inflicted on Sarla Behn.

On Raksha Bandhan day Sarla Behn sprinkled turmeric powder on her hand-spun threads to prepare rakhis. When she tied a rakhi on the wrist of the jailor he was overcome with emotions and could not turn down her request to be allowed to tie rakhi on the wrist of various freedom fighter jail inmates.

Sarla Behn was deep aggrieved by the death of several freedom fighters with whom she had worked due to harsh prison conditions or other adverse factors. After release she continued the work of arranging help and relief for freedom fighter households who had suffered a lot. Following the independence of India she continued her work at the newly formed Lakshmi Ashram where some girls came for a different kind of education and training which prepared them for a life devoted to social service. Several girls trained by Sarla Behn like Vimla Bahuguna and Radha Bhatt later emerged as leading social activists of Uttarakhand.

For some time she also became very involved in Bhoodan movement or Gift of Land movement. This had been initiated by Gandhiji's leading disciple and colleague Vinoba Bhave to bring peaceful change in land relations in the form of land gifts from landowners to landless people (who are generally the poorest people in India's villages). This work also took Sarla Behn to Bihar where she worked in highly adverse conditions for the success of Bhoodan movement.

Back in hills she got closely involved in anti-liquor movements in which her disciples Vimla Bahuguna and Sunderlal Bahuguna were already playing a leading role. These anti-liquor movements had a big impact in removing existing liquor shops from several villages but what was even more important was the moral impact of this women-led social movement on local men as many of them agreed to give up alcoholic consumption for once and for all.

Sarla Behn had to leave hills again to join the efforts in Chambal region for the peaceful surrender and rehabilitation of notorious dacoits. She was given the responsibility of meeting women family members of dacoits and preparing them for this big change. This was an inspiring experience of peace and reconciliation.

During the seventies Chipko (hug the trees) movement had started in Uttarakhand. Gandhian /sarvodaya activists played the leading role in this . Two leading disciples of Sarla Behn, Vimla and Sundarlal Bahuguna made a particularly important contribution. Sarla Behn emerged as a motherly figure for the younger activists — their friend, philosopher and guide.

It was encouraging for Sarla Behn to see that some of the girls trained by her at Lakshmi Ashram Kasauni had started playing such an important role in social and ecological movements. Earlier she had sent Vimla for bhoodan work in Bihar and the feedback she received from Vinoba ji Secretary was that Vimla was like an 'angle from the hills' who assumed very naturally a leadership role in groups of men and women who went to villages for seeking gift of land. The activists trained and inspired by Sarla Behn have played an important role in social and educational movements of Uttarakhand which had a wider national and international impact.

Sarla Behn's life and work convinced her of the great need for a complete and basic change in development paradigm. This change should be in favour of the highly decentralized path based on voluntary frugality or simplicity, non-violence and spirituality rooted in cooperation for the welfare of all .She expressed shock that the biggest brains prefer to hawk their talent to those who pay the most. She made a strong plea for very basic changes in thinking needed for the post industrial age. These views are expressed very effectively in her numerous writings. She continued to be a great inspiration till she breathed her last in her beautifully located Himalayan cottage in Dharamgarh (Pithoragarh, Uttarakhand).

Bharat Dogra has covered several Gandhian movements. His latest book on this subject titled Man Over Machine—A Path Towards Peace has been published by Vitasta.

Source- Sarla Behn – Gandhi's Comrade, Social Reformer and an Ardent Environmentalist | The New LeamSarla Behn – Gandhi's Comrade, Social Reformer and an Ardent Environmentalist | The New Leam

3 Part II: How to deal with the others?

3.1 केदार सिंह कुंजवाल : बादलों की गोद से

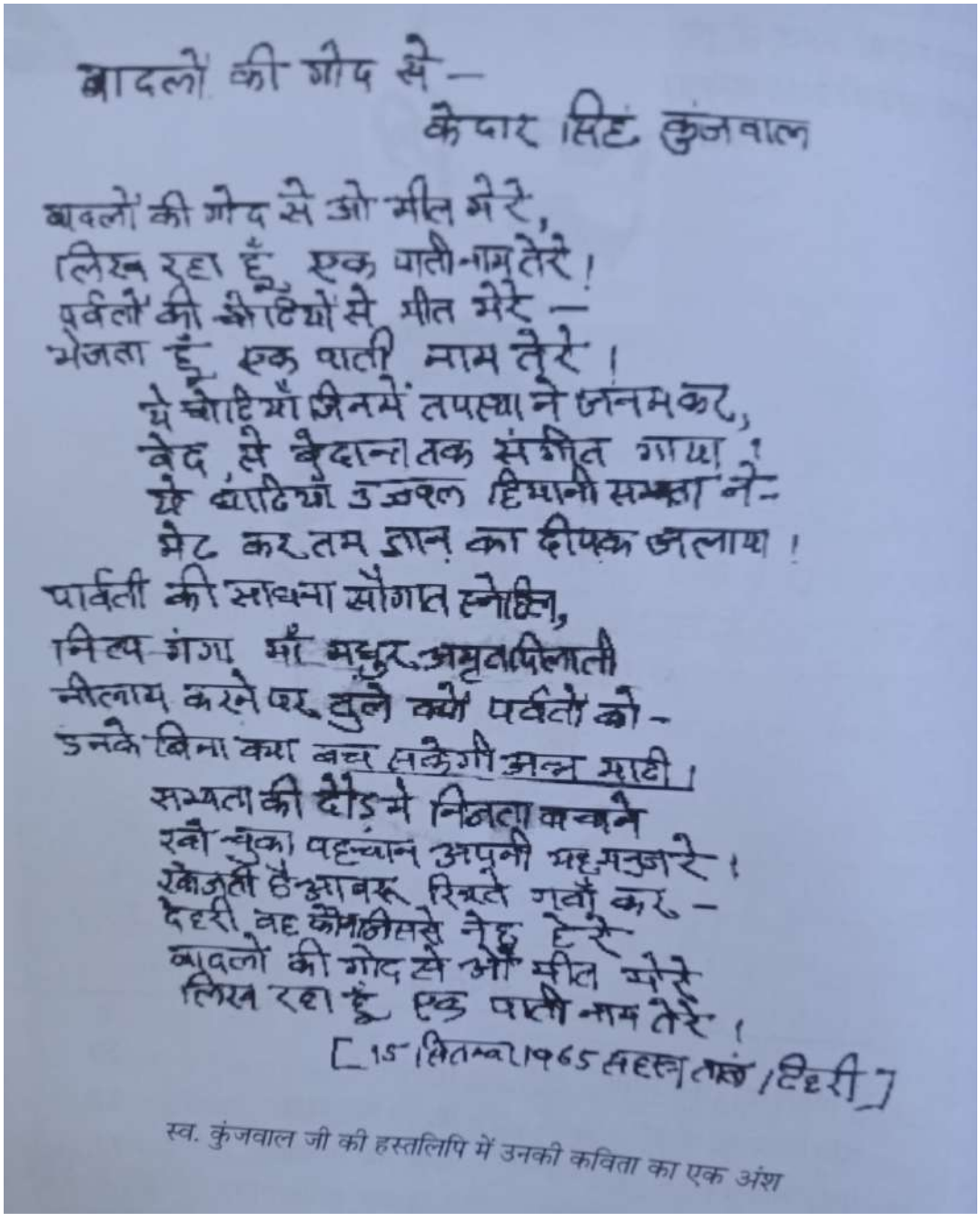

बादलों की गोद से —
केदार सिंह कुंजवाल

बादलों की गोद से ओ मीत मेरे,
लिख रहा हूँ एक पाती-नाम तेरे!
पर्वतों की चोटियों से मीत मेरे —
भेजता हूँ एक पाती नाम तेरे!
ये चोटियाँ जिनमें तपस्या ने जनम कर,
वेद से वेदान्त तक संगीत गाया!
ये चोटियाँ उज्ज्वल हिमानी सभ्यता ने-
मेट कर तम ज्ञान का दीपक जलाया!
पार्वती की साधना सौगात स्नेहिल,
नित्य गंगा माँ मधुर अमृत पिलाती
नीलाम करने पर तुले क्यों पर्वतों को-
उनके बिना क्या बच सकेगी अन्न माटी!
सभ्यता की दौड़ में निकला कमाने
खो चुका पहचान अपनी मह मनुज रे!
खोजती है आबरू रिश्ते गवाँ कर -
देहरी वह कौन जिससे नेह हेरे
बादलों की गोद से ओ मीत मेरे
लिख रहा हूँ एक पाती नाम तेरे!
[15 सितम्बर 1965 सहस्त्रधारा/टिहरी]

स्व. कुंजवाल जी की हस्तलिपि में उनकी कविता का एक अंश

Click here to watch the full video

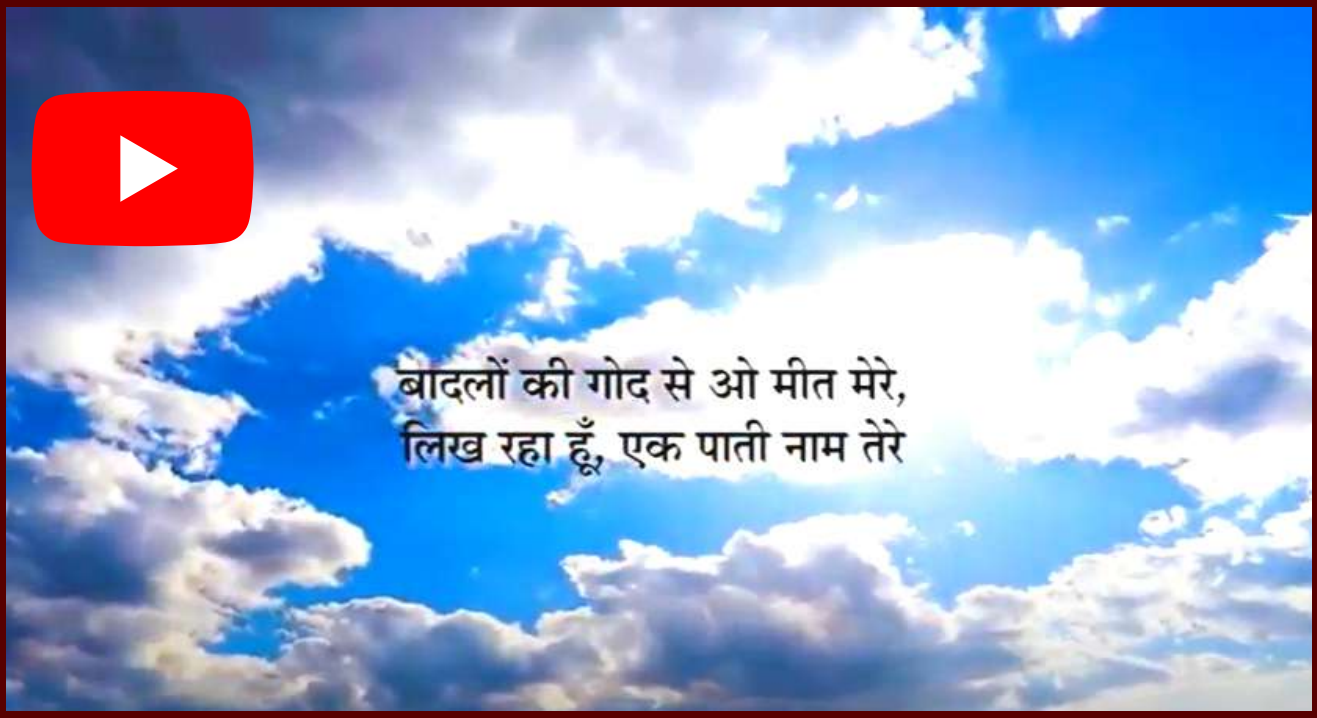

3.2 Coolie Begar and Forest Dissent

According to the Regulations of Fort William, whenever the British officials toured the hills, it was regarded as the duty of the local people to arrange coolies for their luggage. This was known a Coolie Utar; it was compulsory and the status and the condition of the individual concerned were not kept in view. Not only for the officials but also for their vast entourage of servants and the British tourists, coolies had to be arranged without payment.. Then there was Coolie Burdayash and in this system, free ration had to be provided to the officials on tour, and the people were penalized if they failed to do so. According to Coolie Begar the hill people had to work for the British officials on tour without payment. For public works too, bonded labour was enforced during British times. There was a lot of resentment against these social maladies and ultimately the people succeeded in eradicating them through a mass movement in Bageshwar on 13th January 1921.

Another important aspect where the British did not act with prudence was the forest policy. The administration of forests in British Kumaon was beset with many complications from the very beginning of the inception of the so-called scientific or organized control and management. The local people felt that their rights were being encroached upon since the authorities clamped restrictions on the promiscuous felling of trees and grazing of animals. The inhabitants of the hills relied mostly on forests and forest produce. Before the British took up the management of the forests, the people had absolute rights over them. The British administration on the one hand promoted extension of agriculture and the consequent growth of population and on the other access to most of the forests was restricted to ensure commercial production especially after 1920. This must have resulted in a drastic reduction in the forest support base for agriculture on unit area basis. It was thus obvious that inroads on indefeasible and immemorial rights through the forest policy created a general sense of insecurity and resentment amongst the people. Further no information was sought into the requirements of different villages before launching the forest policy. It was only on papers that the authorities were determining the nature and extent of rights alleged to exist in favour of any person or any forest produce of the same.

Later, the British introduced a type of fire protection that involved prescribed burning to reduce drastically the danger of accidental or incendiary fires. The unrestricted burning of pastures and ground vegetation was traditional in the hills, for it promoted the growth of grass and also removed the accumulated chir pine needles which made cattle movement hazardous. Bharat Ratna Pt. Govind Ballabh Pant, who later became Home Minister of India in January 1955, commented on the restrictions to burning as early as 1921, “ This is a source of widespread hardship and the opinion of all classes of people seem to be unanimous on this point.”

Together with this, the people considered the possession and ownership by the government of barren and `benap', unmeasured land, not only as improper and unlawful, but also as usurpation of their forest rights. In 1907, a mass meeting was held in this connection at Almora under the president ship of Major General Wheeler, but nothing fruitful could be achieved. Thus when the resentment reached a critical level, the people stooped down to burning of forests. Incendiary fires in Kumaon affected about 840,000 hectares of forest in British Kumaon. Owing to incendiarism, 24,300 ha of forest were burnt around Naini Tal in 1916. Five years later another outburst caused no less than 317 incendiary fires in Kumaon Division, affecting more than 82,880 ha of forest. It ruined 11, 50,000 of resin channels and 24, 37,500 kg. of resin. It also destroyed over 100,000 flourishing young trees and young crops resulting from 25 years of patient tending.

In 1916, the Kumaon Parishad was formed to deal with the forest problems of Kumaon. Pt. Govind Ballabh Pant, who was appointed the Home Minister of India, worked as its General Secretary. He was later elected to preside over the last annual session of this association, which was held in December in Almora in 1921. It was he who first published a report voicing the popular demands of the inhabitants of Kumaon and Garhwal regarding their rights and concessions in the forests. The government put up posters in public places, stating, " Kumaonis the forests are yours." Telegrams were sent to newspapers like the Pioneer, the Leader and the Indian Telegraph regarding the damage done to forests as well as animals and birds owing to incendiarism in Kumaon Circle. Arrests were also made and the government held the leaders of the Kumaon Parishad responsible for this act of incendiarism in Kumaon Circle. The government then appointed a committee in 1921 to enquire into the grievances of the people of Kumaon and Garhwal regarding their rights and concessions in the forests. The committee was known as The Kumaon Grievance's Committee. The members of the committee toured the region extensively and in all some 5040 witnesses were examined either in person or by representatives from all sections of the society. The report of the committee was submitted in 1926 and was known as the `Forest Grievances Committee's 'Report'. It recommended the formation of Van Pachayats and concomitantly they were established in British Kumaon. These Van Panchayats played a significant role in the freedom struggle.

The next wave of forest unrest coincided with Civil Disobedience Movement. Again there were incendiary fires and during 1931, Kumaon was the centre of self destructive incendiarism, the Reserved Forest being burnt 157 times. In 1938 the government asked the Grievances Committee to reconsider the rights and concessions of the village people in the forests. The report submitted by them is known as An Investigation into the Villagers Rights in the Reserved Forests of Kumaon. Since the promulgation of these orders, there was no change in the British Forest Policy up to 1947. But a legacy of suspicion and resistance was created between the people and the authorities, which even Indpendence in 1947 could not entirely cure.

Coolie Begar and the forest policy were the most important causes of resentment against the British. But gradually the people associated themselves with the main stream of national consciousness. Nan Saheb Pehwas sojourn in Uttarkashi in anonymity is a well known fact. Gandhiji, Swami Vivekanand, Swami Dayanand Saraswati, Annie Besant, Madan Mohan Malviya, Purshottam Das Tandon and Dr. Bhagwan Das etc visits to Uttarakhand, the vernacular press and the exposure of local Congress leaders like Badri Dutt Pande, Mohan Singh Mehta, Har Govind Pant, Indra Singh Nayal, Man Mohan Singh Mehta, Khushi Ram, Mohan Lal Sah etc in the Congress meetings facilitated in disseminating consciousness amidst the masses and the leaders. Further the people from this region were also influenced by the revolutionary movements during 1929 to 1933. Bhawani Singh, Indra Singh and Bachhu Lal all three from Garhwal took active part in all the revolutionary activities of Chandra Shekhar Azad and his associates. He spent some time in Dogadda to impart pistol training to young revolutionaries. The famous revolutionary Ras Bihari Bose stayed incognito in Uttarakhand and worked in the Forest Research Institute, Dehradun to disseminate his philosophy.

Another incident, which deserves mention is when Chandra Singh Garhwali and his companions from 2/18 Royal Garhwal Rifles refused to fire on the followers of Khan Abdul Gaffar Khan in Peshwar on 23rd April 1930. At the court martial proceedings the Garhwalis said, "We will not shoot our unarmed brethren…. You may blow us from the guns if you like." Frank Moraes, in the book Witness to an Era has mentioned that the incident shook the British. General Mohan Singh of the India National Army (INA) fame has observed that the heroic example of Chandra Singh Garhwali inspired the Garhwalis to join the INA.

On September 1942 two battalions of the Royal Garhwal Rifles, 2/18 and 5/ 18 joined the INA. There were 2,500 Garhwalis in these two battalions out of which 600 were killed in action. Philip Mason, the British Defence Secretary was of the view that the Garhwali soldiers were infused with a spirit of nationalism and they were intrepid soldiers.

The Garhwalis held some very important positions in the INA. Lt. Colonel. Chandra Singh Negi was appointed as the Commander of the Officers Training School in Singapore. Major Deb Singh Danu was deployed as Commander of the personal guards' battalion of Subhash Chandra Bose. Lt. Col.Budhi Singh Rawat held the esteemed position as personal adjutant of Subhash Chandra Bose. Major Padam Singh Negi was commanding the third battalion and Lt. Colonel Pitri Saran Raturi the first battalion of the Subhash Regiment. For his gallantry and outstanding qualities of leadership, Raturi was decorated with the Sardar-e-Jung Award by Netaji Subhash himself. An intrepid soldier from Jaunsar Babar who showed exemplary courage in the INA was Kesari Chand. He was arrested by the British and as prisoner of war was hanged in Delhi on 3rd May 1945 at the age of 24 years and 6 months. To commemorate his sacrifice and intrepidity, Shaheed Veer Kesari Chand Mela is celebrated in Ramtal in Chakrata Tahsil every year during April-May in Navratra.

Whatever happened in British Kumaon its repercussions were felt in Tehri Garhwal State and there too the kings not unlike their counterparts in British Kumaon failed in redressing the problems of forestry and Coolie Begar. The resentment towards forest management was manifested in the Rawain incident of 30th May, 1930 in which according to the Information Department more than 200 people died. The Rawain Massacre had a deep effect on the people of British Kumaon. A meeting was held there to protest against the brutalities and Diwan Chakra Dhar Jayal of Tehri Garhwal State who was responsible for this bloodshed was nicknamed as 'Khuni'. The incident shocked the people so much that even today songs are sung in Garhwal to commemorate this tragedy.

In Tehri Garhwal State, in the initial stages the uprisings were against feudalism and the forest policy, but soon the echoes of the movement in Kumaon resonated through the State and the energies of the people were channelized in the right direction. By 1945 they started demanding liberation not only from the fetters of feudalism but also from the shackles of alien yoke. Thus with the Independence of the country, an interim government was established in Tehri Garhwal State in February 1948. This government did not function for more than one year and on August 1, 1949 a proclamation was made by the India Government to integrate Tehri Garhwal State with Uttar Pradesh.

Source- Coolie Begar and Forest Dissent | Uttarakhand Open University (archive.org)

3.3 राम सिंह धौनी

राम सिंह धौनी (1893-1930): गॉव तल्ला बिनौला, तल्ला सालम, तहसील जैती, अल्मोड़ा। महान देशभक्त, सन 1921 में देश में सर्वप्रथम 'जयहिन्द का उदघोष करने वाले राष्ट्र प्रेमी. तत्कालीन भारतीय रियासतों में राजनीतिक आन्दोलनों के जन्मदाता, सालम क्षेत्र के पहले स्नातक, सम्पादक और पत्रकार धौनी जी ने नेताजी सुभाष चन्द्र से पहले ही 1920-21 में 'जय हिन्द' का नारा दे दिया था वे अभिवादन के तौर पे पत्र और बोलचाल में 'जय हिन्द का प्रयोग किया करते थे।

1911 में वर्नाक्युलर मिडिल परीक्षा सारे प्रान्त में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। 1919 में इलाहाबाद वि.वि. से बी.ए. की डिग्री ली, तत्कालीन कुमाऊँ कमिश्नर पी. विटम ने धौनी जी को तहसीलदार की नौकरी का प्रस्ताव दिया, लेकिन उन्होंने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। जब धौनी जी अपने क्षेत्र सालम लौटे तो जनता ने अपूर्व उत्साह से इनका स्वागत किया। अपने क्षेत्र के पहले रोज्युएट को ढोल-नगाड़ों के साथ अल्मोड़ा से गांव तक पालकी पर ले गए। होमरूल लीग का सदस्य बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन से सीधे जुड़ गए। 1920 में राजस्थान चले गए। वहाँ सूरतगढ़ स्कूल में अध्यापक हो गए। वहाँ से फतेहपुर गए और वहां प्रधानाध्यापक बन गए। 1921 में फतेहपुर मे कांग्रेस कमेटी का गठन किया और आजादी का बिगुल बजा दिया। वहीं धौनी जी ने एक साप्ताहिक पत्र बन्धु' का प्रकाशन करवाया। कुछ समय उपरान्त आप नेपाल की रियासत बजरंग चले गए। वहां धौनी जी ने राजकमारों को शिक्षा दी। तत्पश्चात आप अल्मोड़ा लौट आए। 1923 से 1927 तक अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य रहे। एक वर्ष तक (1925-26) 'शक्ति' साप्ताहिक का सम्पादन किया। यहां से आप बम्बई चले गए, जहां आपने हिमालय पर्वतीय संघ की स्थापना की। स्वाधीनता संग्राम के दिनों यद्यपि धौनी जी कभी जेल नहीं गए, तथापि समाज को स्वाधीनता प्राप्ति के लिए और सामाजिक उन्नयन में इनकी उल्लेखनीय भागीदारी स्मरणीय है।

स्वतंत्रता सेनानी राम सिंह धौनी की मृत्यु के बाद 1935 में सालम (जैती) में राम सिंह धौनी आश्रम की स्थापना की थी जो की स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख केंद्र भी रहा। महान स्वतंत्रता सेनानी राम सिंह धौनी जी की याद में बना ये आश्रम संरक्षण के आभाव से बदहाल हो चूका है।

3.4 सांझे चूल्हे में एक सामाजिक क्रांति

प्रेरणा

'साझे चूल्हे' में एक सामाजिक क्रांति

❑ डॉ. पवन कुदवान

अतीत स्वर्णिम हो तो इतिहास अपनी ओर खींच लेता है। क्रान्तिकारी लेखक कुँवर प्रसून जी की कलम में 'तीन कार्यकर्ताओं का सहजीवन' लेख युगवाणी पत्रिका में पढ़ा'। इसी उत्साही भाव से मैं सीधे पहुँच गया बूढ़ाकेदार के थाती गाँव में इतिहास का वर्तमान ढूंढने। स्वाधीन भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के हिमालयी क्षेत्र भिलंगना घाटी में एक ऐसी सामाजिक क्रांति घटित हुई जिसे सामाजिक क्षेत्र में विश्व की पहली क्रांति माना जा सकता है।

यह वह दौर था, जब सामाजिक संकीर्णताओं की बुनियाद इतनी गहरी थी कि उससे बाहर निकलना असम्भव था। किंतु सम्भावना ढूंढने वाले फिर भी उम्मीद खोज लेते हैं। इस सामाजिक क्रांति के जनक थाती के धर्मानंद नौटियाल थे, जिनकी सादगी के कारण उन्हें 'संत' भी कहा जाता है। गाँव में इनकी एक छोटी दुकान थी जिसमें प्रायः सार्थक चर्चायें होती रहती थी। वहाँ पर तीन हुक्के रखे रहते थे। एक ब्राह्मणों के लिए, दूसरा राजपूतों और तीसरा शिल्पकारों हेतु। शिल्पकार भरपुरू नगवाण ने अलग-अलग हुक्कों की क्या आवश्यकता है? पर प्रश्न किया तो धर्मानंद जी ने उत्तर दिया 'कोई आवश्यकता नहीं'- कल से एक ही हुक्का रखूंगा। कभी-कभार दुकान पर अखबार उस जमाने में आ जाता था, जिसे वे स्वयं जोर-जोर से पढ़ते थे और अन्य लोग उन्हें सुनते थे। धर्मानंद जी ने अखबार पढ़ा और कहा देश अब आजाद है। अब न कोई छोटा और न कोई बड़ा, सब समान हैं। पास बैठे भरपुरू नगवाण जी ने कहा कहने और करने में अंतर होता है। 'यदि ऐसा है तो आप मुझे अपने चूल्हे पर खिला सकेंगे'। धर्मानंद जी ने कहा 'हाँ, खिला सकता हूँ' आप कल दोपहर हमारे घर आइए। भरपुरू नगवाण में सामाजिक चेतना एवं साहस तो था ही, वे उनके घर पर आ गए। उन्हें धर्मानंद जी सीधे अपनी रसोई में ले गए और सम्मान के साथ खाना खिलाया। उनकी पत्नी सतेश्वरी देवी माइके से गाँधी विचारधारा की थी। थोड़ी असहजता के साथ सम्मान से रसोई में खाना खिलाया। भले ठीक उसी समय गाँव की एक महिला पर देवता भी आया किंतु मानवता के पुजारियों को तो सामाजिक क्रांति लानी थी जिस कारण उन्हें देवताओं पर भी भरोसा नहीं था। उनका अपना अडिग मार्ग था।

इन दो प्रश्नों के उत्तर से जन्म हुआ एक सामाजिक क्रान्ति का। वैचारिक मित्रता सामाजिक मित्रता में बदल गई किंतु दोनों को ही समाज ने प्रताड़ित किया। इस कड़ी में सयाणा परिवार के थोकदार बहादुर सिंह राणा जी भी सामाजिक अस्पृश्यता निवारण हेतु जुड़ गए। तीनों ही युवा गाँधीवादी एवं सर्वोदयी विचारधारा के सच्चे वाहक थे। जिन्होंने इतनी संकीर्णता में अपमान तो झेला किंतु विचारधारा का त्याग नहीं किया। आपसी विचारों की आत्मीयता ने उन्हें साझा परिवार (साम्ययोगी परिवार) में ला दिया। सरोला ब्राह्मण धर्मानंद, थोकदार एवं मालगुजार बहादुर सिंह राणा और शिल्पकार भरपुरू नगवाण। तीनों लोगों का परिवार अब एक चूल्हे की रोटी खाने लगा। जिसमें कोई जाति भेद नहीं था। बहादुर सिंह और धर्मानंद जी थाती गाँव के और भरपुरू नगवाण नदी पार रक्षिया गाँव के थे। इन्होंने साझा प्रयास से एक साझा तीन मंजिला मकान बनवाया जो आज भी मौजूद है। गाँव के 80 वर्षीय पूरण दास जी ने बताया कि इस तीन मंजिले मकान के लिए पत्थर आदि मैंने भी लाये थे। इस भवन में एक गौशाला भी थी जिसके लिए हम घास काटकर लाते थे। मैंने तीनों के साझे पारिवारिक प्रेम को देखा है।

यह एक साझे घर के साथ एक उद्योगशाला भी थी जिसमें आत्मनिर्भरता आधारित कामों को सिखाया जाता था। रसोई घर, पुस्तकालय, गाँधी शांति कक्ष, कताई-बुनाई केन्द्र, गोशाला आदि। इस साझे मकान में तीनों परिवारों का खाना एक साथ बनता था। जब खेती-बाड़ी का काम थाती में होता तो नगवाण का परिवार इन दोनों परिवारों के साथ मिलकर काम करता और जब रक्षिया में होता तब दोनों परिवार के लोग [illegible] जाते। वहाँ खाना खाते। काम रक्षिया [illegible] या थाती में लेकिन खाना एक चूल्हे [illegible] खाया जाता था। कितनी बड़ी बात थी यह। साझे परिवार में साथ रहे उस समय के छोटे-छोटे बच्चे जय प्रकाश राणा, धीरेन्द्र नौटियाल एवं किशोरी लाल नगवाण जी से यह सत्यता पूछी तो तीनों की बातों में इस ऐतिहासिकता को लेकर एक ही स्वर था। सेवानिवृत्त शिक्षक किशोरी लाल ने कहा 'धर्मानंद एवं बहादुर सिंह राणा जी के परिवारों को बहुत सामाजिक अपमान झेलना पड़ा, मेरे पिताजी ने भी झेला किंतु उन्हें यह विरासतीय आदत थी'।

इन तीनों सामाजिक क्रांति के महानायकों को देवदूत कहने में भी संकोच होता है क्योंकि अस्पृश्यता निवारण पर दैविक शक्तियाँ भी मौन रही हैं देवभूमि। लिहाजा इन्हें मानव धर्म के दूत कहना न्याय संगत होगा जो सामाजिक न्याय, सौहार्द-समरसता चाहते थे। इस हेतु इन्होंने 26 जनवरी, 1950 को बूढ़ा केदार में एक सहभोज कार्यक्रम किया जिसमें दलितों ने भी सहभाग किया। किंतु कट्टर रूढ़िवादियों ने धर्मानंद नौटियाल,

भरपुरू नगवाण | बहादुर सिंह राणा | धर्मानंद नौटियाल

बहादुर सिंह राणा सहित कुछ लोगों पर चंद्रायण (सामाजिक बहिष्कार) कर दिया। मानवता के पुजारियों के हौसलों में कहाँ कमी आने वाली थी। गाँव में घूम-घूम कर गाँधी जी के भजनों के साथ प्रातःकाल उठकर लोकमानस में समताभाव जागृत करने हेतु गाँव में प्रभात फेरी लगाते थे। रक्षिया गाँव में दलित बच्चों के उत्थान हेतु रात्रि पाठशाला चलायी। धर्मानंद जी बच्चों को पढ़ाते थे एवं उन्हीं के हाथों से बना भोजन आदि भी करते थे। यह सब देखकर क्षेत्र में जन आक्रोश था जिस कारण कोई अप्रिय घटना 'संत' जी के साथ न हो बहादुर सिंह राणा एवं भरपुरू नगवाण भी इनके साथ रहते थे। इन्होंने दलितों के नाम भी सुधारे। मंगतू को मंगलानंद, मूस्सू को मंसानंद, अषाढ़ू को असलानंद आदि नामों की साथर्कता दी। स्वयं सरोला ब्राह्मण होने पर भी नाम के साथ अपनी जाति 'नौटियाल' नहीं लगाते थे। अस्पृश्यता निवारण के साथ-साथ इन्होंने आत्मनिर्भरता आधारित रोजगार पर बल दिया।

सामाजिक कट्टरता चाहे कितनी हो देर सबेर जीत मानवता की ही होती है। सहनशक्ति मजबूत होनी चाहिए। पुर्नजागरण के जन्मदाता राजा राम मोहन राय को भी घर परिवार का अपयश झेलना पड़ा लेकिन वह नहीं डिगे और सती प्रथा में कितनी ही जिंदगियाँ बचायी। इतिहास हमेशा अपनी गोद में उन्हें स्थान देता है, जो दुनिया में अपना मौलिक मार्ग बनाते हैं। संत धर्मानंद के पिताजी हरिकृष्ण नौटियाल रियासतकाल में पटवारी थे। बहादुर सिंह राणा के पिता जी गाँव के सयाणे थे। सामाजिकता में बदलाव के लिए उन्हें अपने परिवारों का स्वाभिमान न्योछावर करना पड़ा। ऐसा नहीं कि उनके कार्यों का मूल्यांकन नहीं हुआ। 1955 में उन्होंने ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ा, कुछ प्रत्याशी उनके सम्मान में स्वयं ही बैठ गए। एक उम्मीदवार लड़ा जो चुनाव हार गया। इसी तरह 1981-95 बहादुर सिंह जी प्रधान रहे। उन्होंने निर्मल वर्ग आवास में हरिजनों के घास फूस वाले मकानों को पक्का बनवा दिया था। भरपुरू नगवाण भी रक्षिया के ग्राम प्रधान 1955-65 तक रहे।

मैंने जब धर्मानंद जी के बेटे धीरेन्द्र

तीन मंजिला साझा मकान

प्रताप नौटियाल एवं बहादुर सिंह राणा जी के पुत्र जय प्रकाश राणा से उनके घर पर बातचीत की तो उन्होंने कहा हमें गर्व है कि हमारे पिताओं ने सामाजिकता की ऐसी क्रांति प्रज्वलित की जिसका अपना इतिहास है। भले हमें अपने समाज का सामाजिक अपयश झेलना पड़ा किंतु आज सबको गौरव होता है। हमें अपने भाई-बंध, रिश्तेदार अपने घर में नहीं घुसने देते थे- कहते तुम डोमिगी (अछूत हो गए हो)। धीरेन्द्र नौटियाल जी ने अपने संस्मरण में बताया कि मेरी फूफू की शादी में गाँव वाले खाना खाने नहीं आये। किंतु इन सब बातों से विचारों की सुदृढ़ता में कमी नहीं आयी। वक्त बीतता गया बातें सामान्य होती गयी। एक दिन पिताजी रक्षिया गाँव से अन्य परिवार की पुष्पा दीदी को बुलाकर लाये और मेरी माँ को कहा 'तुम खाना नहीं बनाओगी, रसोई में पुष्पा खाना बनायेगी'। मैं रक्षिया जाता रहता था और झूपला बढ़ा जी से दूध पीने के लिए मांगता रहता था। सेवा दास ग्राम घोनगढ़ के यहाँ चचेरू और दही खाने का आनंद ही कुछ और था। जय प्रकाश राणा जी ने भी इनके घर खायी खीर को याद करते हुए कहा कि हम आज भी अपनी पैतृक ऐतिहासिकता में है। नगवाण बढ़ा जी के बेटे किशोरी लाल जी के यहाँ जैसे ही हम जाते, चाय पहले ही बन जाती है। हमारे समय तक यह सामाजिक धरोहर हमारे साथ है। आगे बच्चों की जैसी इच्छा होगी। संत जी का संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने बताया पिताजी कभी भी अपने आंगन में चौती गीत नहीं लगवाते थे। ऐसा न करने के लिए औजियों को कहते थे। धीरेन्द्र जी ने बताया मैं ग्राम प्रधान के लिए उठा मेरे साथ छः प्रत्याशी और भी पिताजी ने वोट ही नहीं डाला। कहा लिए अन्य छः प्रत्याशी भी समान हैं।

गाँधी जी का ग्राम स्वराज का स्वच्छता दर्शन एवं सर्वोदयी भू-आंदोलन के अंतर्गत भूमिहीनों को वन विभाग के सहयोग से जमीन दिलवायी। बूढ़ा केदार में दलितों को मंदिर प्रवेश करवाना एक बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि थी जिसमें समाजवादी 'पर्यावरण के गाँधी' सुंदर लाल बहुगुणा जी उनकी धर्मपत्नी विमला बहुगुणा, परिपूर्णानंद सेमवाल, धर्मानंद, बहादुर सिंह आदि पर भीड़ द्वारा विरोध स्वरूप जूते तक फेंके गए। दलितों को मंदिर के भीतर प्रवेश करवा दिया गया था। मंदिर के अंदर कोई अप्रिय घटना न घटे, सुंदर लाल बहुगुणा जी ने मंदिर की चौखट पर दोनों हाथ ऐसे टिकाये कि कोई भी अंदर नहीं जा सका। यदि रूढ़ीवादी सोच मंदिर में घुस जाती तो दलितों पर अंदर उग्र प्रहार होता। धर्मानंद जी ने अभिव्यक्त किया कि 'मुझे उस दिन मालूम पड़ा कि

बहुगुणा जी शारीरिक रूप से भी कितने मजबूत हैं'। दलितों का मंदिर प्रवेश करवाने के बाद स्वयं धर्मानंद ने उपद्रवियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया जिसकी पैरवी वकील विरेन्द्र सकलानी ने की। बाद में समझौता हो गया।

छूआछूत के खिलाफ इतना आत्मीय संघर्ष देश दुनिया में कहीं और हुआ हो ऐसा नहीं लगता। वह भी एक ब्राह्मण एवं थोकदार ठाकुर द्वारा जिन्होंने भले अपने नाते रिश्तेदारों में अपना मान सम्मान खो दिया किंतु एक सामाजिक इतिहास लिख दिया। जब भी अस्पृश्यता निवारण की बात होगी यह सामाजिक क्रांति की ऐतिहासिकता जीवंत रहेगी। जिस क्षेत्र में तीन दिन तक मुर्दा नदी तट पर न जलाने दिया गया, जहाँ पुल से आर-पार आने-जाने में दलितों को तब तक पुल पर नहीं चलना था जब तक सवर्ण पुल पार न कर ले। उस माटी में दलित परिवार के साथ साझा चूल्हा होना दुनिया की एक अनोखी घटना है।

आइए उपरोक्त बातों की आज के सामाजिक संदर्भ में तुलना करते हैं कि यह कहाँ तक न्याय संगत लगती है? आज के पढ़े-लिखे समाज में ऐसी सामाजिक आत्मीयता नहीं है। अलग-अलग जातियों का साझा चूल्हा तो कल्पना मात्र है। बहुत से उच्च शिक्षित विद्वानों को आज भी पानी पिलाने में संकोच होता है। आज जहाँ आटा चक्की छूने मात्र से दलित की गर्दन काट दी जाती है। कुर्सी पर बैठकर खाने पर जान गवानी पड़ती है। ऐसे में प्रश्न उठते हैं कि इतनी गौरवमयी देवभूमि के साझे चूल्हे का ज्ञान समाज की बीमार सोच को कौन देगा? जहाँ स्वयं कुछ ज्ञानी लोग ही स्कूलों में बच्चों की सामाजिक विषमता में कतारें लगवाते हैं, उन्हें जरूर धर्मानंद जी की पाठशाला का पाठ कौन पढ़ायेगा? जिस राजनीति के झूठे नेता समाजवादी दर्शन दिखाकर किसी दलित के यहाँ भोजन खाने का नाटक करते हैं उन्हें इन तीन मानवता के पुजारियों के साझे जीवन की सच्चाई बिना कैमरे के कौन बतायेगा? एक दिन में कैमरे के सम्मुख नाटक करने से सामाजिक समरसता नहीं आती। काश! ऐसी सच्ची सामाजिक क्रांतियां होती रहती तो सम्भव था जाति बंधन का भूत खत्म हो चुका होता। ऐसे में कोई जरूरत न होती संवैधानिक प्रावधानों की।

गाँधीवादी एवं सर्वोदयी विचारधारा से प्रभावित तीनों युवकों की सामाजिक साझे चूल्हे की प्रयोगशाला बारह वर्षों तक चली। भरपूरू नगवाण का साथ छः वर्षों तक रहा और बहादुर सिंह राणा का सहजीवन बारह वर्षों तक। जैसे एक संयुक्त परिवार का बंटवारा होता उसी भाँति विभिन्न सामाजिकता के तीनों भाई अलग हुए किंतु उनके विचार आज भी समाज में जिंदा है। ऐसी हिम्मत और साहस उनमें ही होती है जिनका जन्म कुछ अलग करने हेतु होता है। बातचीत के बीच मैंने आखिर में धीरेन्द्र जी एवं जय प्रकाश जी से प्रश्न पूछा कि समाज में कभी-कभार सामाजिक अपयश वाली घटनाएं समाज की चिंता बढ़ा देती है। क्या ऐसा इसलिए होता है कि इन्हें आरक्षण मिलता है? उन्होंने सीधे उत्तर दिया। क्या

जयप्रकाश राणा सुपुत्र बादर सिंह राणा

धीरेंद्र नौटियाल सुपुत्र धर्मानंद नौटियाल

समाज इन लोगों को दारू (शराब) बेचते ही देखना चाहता है? यदि आरक्षण से आज जाति भेद होता है तो क्यों पिछड़ा क्षेत्र घोषित करने हेतु लोग आरक्षण प्राप्त करना चाहते हैं? अच्छा तो है आज हम रक्षिया गाँव में आर्थिक समृद्धि देखते हैं। सामाजिकता में आज के समाज सुधारकों, चिंतकों एवं राजनीति के वाहकों को यदि समाज में सच्चा सौहार्द लाना है तो जरूर बूढ़ाकेदार की भूमि में जाइए। जानिए वहाँ का सामाजिक इतिहास। शोधकताओं से प्रार्थना है ऐसे विषयों पर शोध कर पुस्तक लिखें जिससे समाज में सार्थक संदेश जायेगा।

नई शिक्षा नीति 2020 में देश 21
पाठयक्रम में 'साझे चूल्हे की सामाजिक..
के नाम से विषय वस्तु प्रस्तुत होनी चाहिए। इस विषय पर पर्याप्त सामग्री के दस्तावेज आज भी थाती गाँव में मौजूद हैं। कोई भी समाजशास्त्री, शोधकर्ता इन पर पुस्तक लिखकर देश, समाज को लाभान्वित कर सकता है। आज समाज इनकी ऐतिहासिक सामाजिकता का भले अनुकरण करे अथवा नहीं किंतु इनका इतिहास जरूर देश समाज में उल्लिखित किया एवं पढ़ाया जाना चाहिए। साझे चूल्हे की ही सार्थकता में गाँधीवादी सर्वोदयी विचारक स्व. बिहारी लाल जी की संस्था 'लोक जीवन विकास भारती' के बुनियादी दर्शन ने दुनिया को प्रभावित कर समाज को लाभान्वित किया है। ●

4 Part III: How to deal with Nature?

4.1 आज हिमाल तुमन के धत्यूंछौ: गिरीश तिवारी "गिर्दा"

हिमालय को बचाने का आह्वान करती गिरीश तिवारी "गिर्दा" की मर्मस्पर्शी कविता

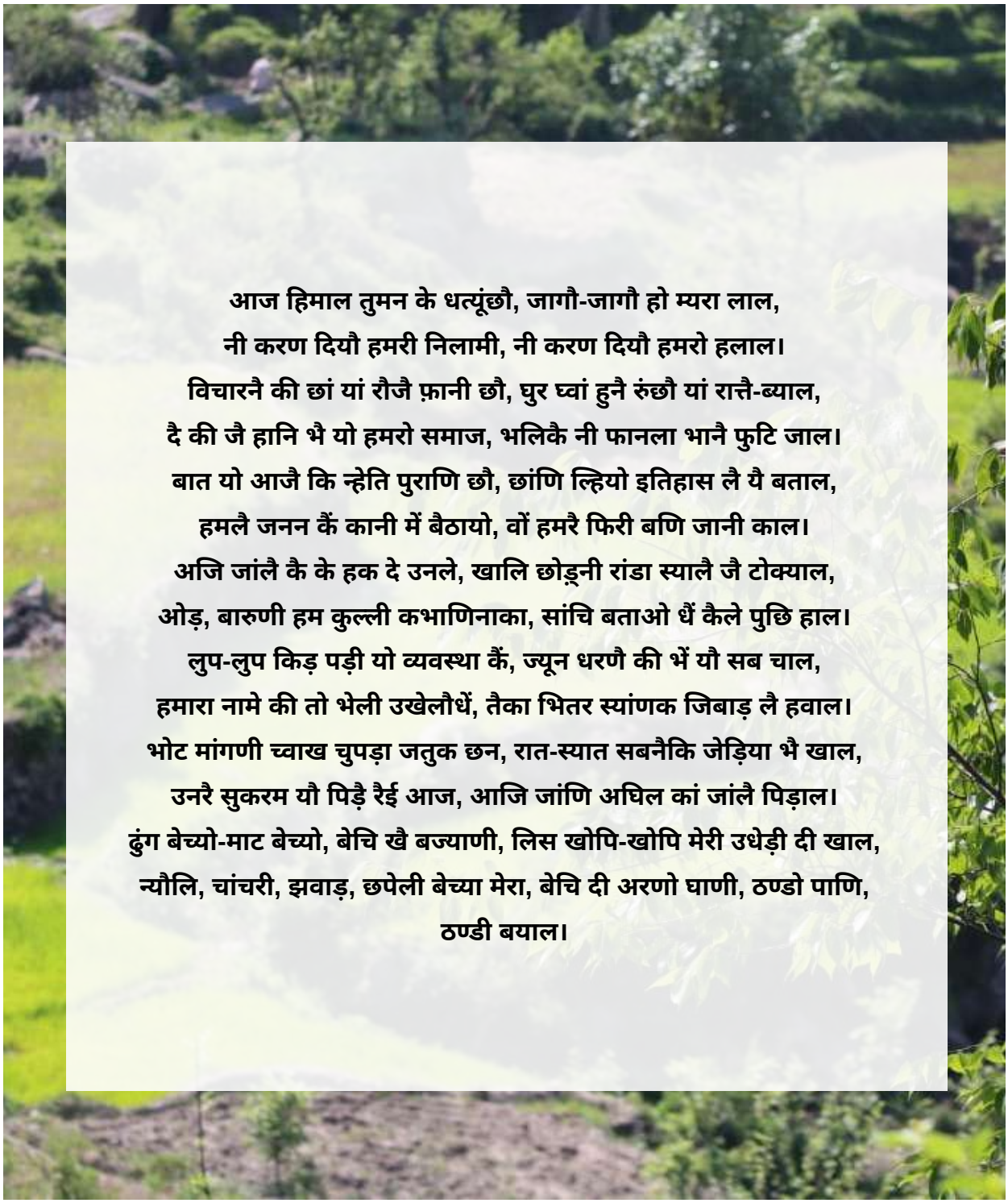

आज हिमाल तुमन के धत्यूंछौ, जागौ-जागौ हो म्यरा लाल,
नी करण दियौ हमरी निलामी, नी करण दियौ हमरो हलाल।
विचारनै की छां यां रौजै फ़ानी छौ, घुर घ्वां हुनै रुंछौ यां रात्तै-ब्याल,
दै की जै हानि भै यो हमरो समाज, भलिकै नी फानला भानै फुटि जाल।
बात यो आजै कि न्हेति पुराणि छौ, छांणि ल्हियो इतिहास लै यै बताल,
हमलै जनन कैं कानी में बैठायो, वों हमरै फिरी बणि जानी काल।
अजि जांलै कै के हक दे उनले, खालि छोड़्नी रांडा स्यालै जै टोक्याल,
ओड़, बारुणी हम कुल्ली कभाणिनाका, सांचि बताओ धैं कैले पुछि हाल।
लुप-लुप किड़ पड़ी यो व्यवस्था कैं, ज्यून धरणै की भें यौ सब चाल,
हमारा नामे की तो भेली उखेलौधें, तैका भितर स्यांणक जिबाड़ लै हवाल।
भोट मांगणी च्वाख चुपड़ा जतुक छन, रात-स्यात सबनैकि जेड़िया भै खाल,
उनरै सुकरम यौ पिड़ै रैई आज, आजि जांणि अघिल कां जांलै पिड़ाल।
ढुंग बेच्यो-माट बेच्यो, बेचि खै बज्याणी, लिस खोपि-खोपि मेरी उधेड़ी दी खाल,
न्यौलि, चांचरी, झवाड़, छपेली बेच्या मेरा, बेचि दी अरणो घाणी, ठण्डो पाणि,
ठण्डी बयाल।

जनकवि गिर्दा की शानदार कविता सुनिए

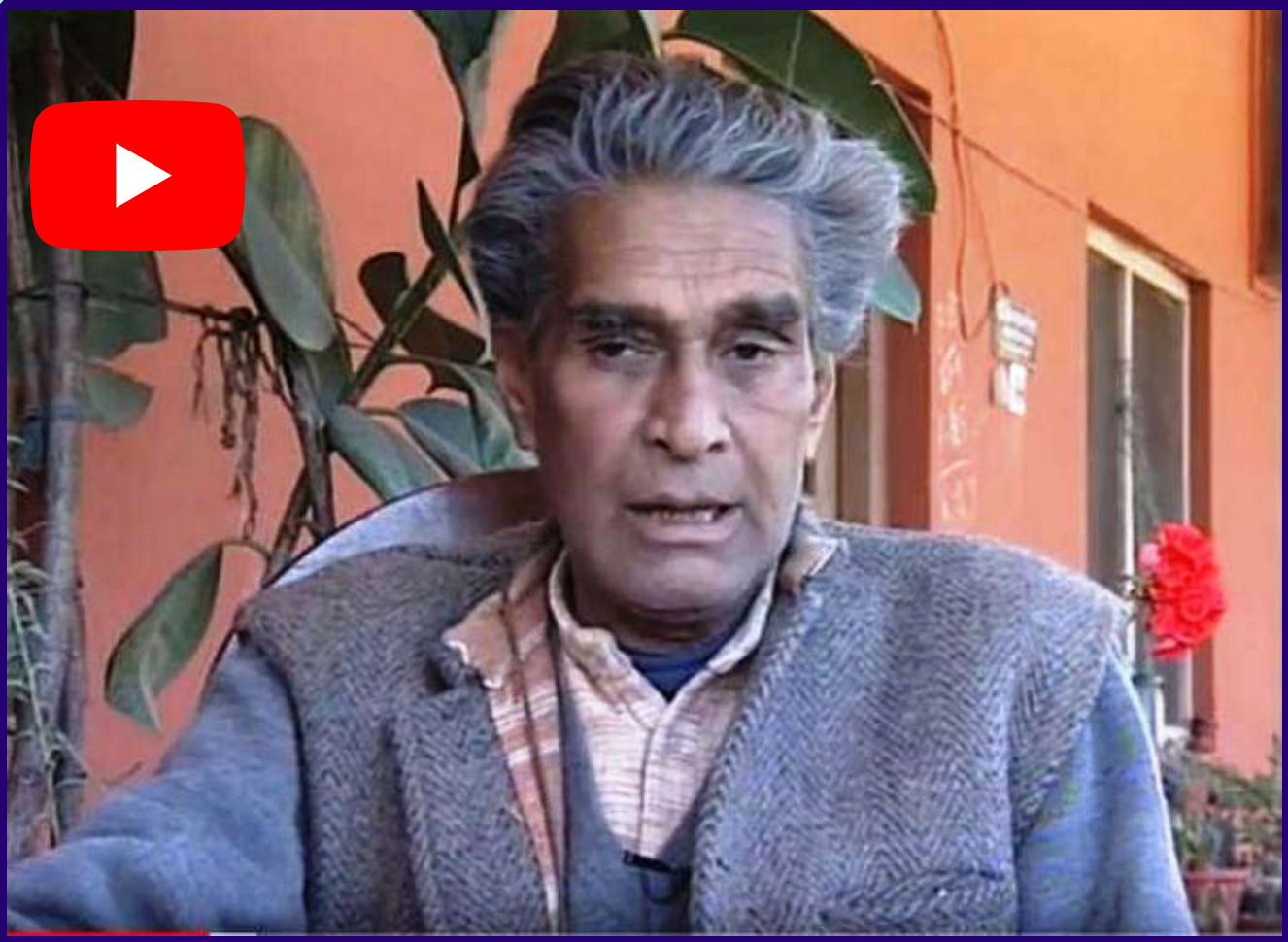

Click the link below to watch the video:

https://youtu.be/8yC6KCmaBBs

4.2 चन्द्र कुंवर बर्त्वाल- हिंदी के कालिदास

रुद्रप्रयाग,

मैं न चाहता युग-युग तक पृथ्वी पर जीना, पर उतना जी लूं जितना जीना सुंदर हो! मैं न चाहता जीवन भर मधुरस ही पीना, पर उतना पी लूं जिससे मधुमय अंतर हो!!

ये पंक्तियां है हिंदी के कालिदास के रूप में जाने जाने वाले प्रकृति के चहते कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल की जिनका का 101वां जन्मदिवस है। चन्द्र कुंवर बर्त्वाल का जन्म रुद्रप्रयाग ज़िले के ग्राम मालकोटी, पट्टी तल्ला नागपुर में 20 अगस्त 1919 को हुआ था। उन्होंने मात्र 28 साल के जीवन में एक हज़ार अनमोल कविताएं, 24 कहानियां, एकांकी और बाल साहित्य का अनमोल खजाना हिन्दी साहित्य को दिया था। मृत्यु पर आत्मीय ढंग से और विस्तार से लिखने वाले चंद्रकुंवर बर्त्वाल हिंदी के पहले कवि हैं।

प्रकृति का चितेरा

कालिदास को अपना गुरु मानने वाले चन्द्रकुंवर बर्त्वाल ने पोखरी और अगस्तमुनि में अध्यापन भी किया था। चन्द्रकुंवर बर्त्वाल को प्रकृति प्रेमी कवि माना जाता है। उनकी कविताओं में हिमालय, झरनों, नदियों, फूलों, खेतों, बसन्त का वर्णन तो है ही उपनिवेशवाद का विरोध भी दिखता है। आज उनके काव्य पर कई छात्र पीएचडी से लेकर डीलिट् कर रहे हैं।

कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल प्रमुख कृतियों में विराट ज्योति, कंकड़-पत्थर, पयस्विनी, काफल पाक्कू, जीतू, मेघ नंदिनी हैं। युवावस्था में ही वह तपेदिक यानी टीबी के शिकार बन गए थे और इसके चलते उन्हें पांवलिया के जंगल में बने घर में एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ा था। मृत्यु के सामने खड़े कवि चन्द्रकुंवर बर्त्वाल ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कविताओं को लिखाय 14 सितम्बर, 1947 को हिन्दी साहित्य को बेहद समृद्ध खजाना देकर यह युवा कवि दुनिया को अलविदा कह गया।

मृत्यु के बाद मिली पहचान

कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल की मृत्यु के बाद उनके सहपाठी शंभुप्रसाद बहुगुणा ने उनकी रचनाओं को प्रकाशित करवाया और यह दुनिया के सामने आईं।

इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि आज भी हिन्दी साहित्य के अनमोल रत्न कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल को राष्ट्रीय स्तर पर वो सम्मान प्राप्त नही हो सका जिसके वह हकदार थे। उनकी कर्मस्थली, पांवलिया जंगल का वह घर जहां मृत्यु से पहले उन्होंने अपना सर्वोत्तम काव्य लिखा था, आज खंडहर हो रहा है। हालांकि प्रशासन कई बार दावा कर चुका है कि वहां संग्राहलय और पर्यटन स्थल बनाया जाएगा।

Source - https://hindi.news18.com/news/uttarakhand/rudraprayag-101th-birth-anniversary-of-kalidaas-of-hindi-chandra-kunwar-bartwal-first-hindi-poet-to-write-on-death-with-affection-ukrd-3209131.html

Video link - https://www.youtube.com/watch?v=0sKCYSvEUM0

मुझे पहाड़ ही प्यारे हैं - स्व. श्री चंद्र कुंवर बर्त्वाल

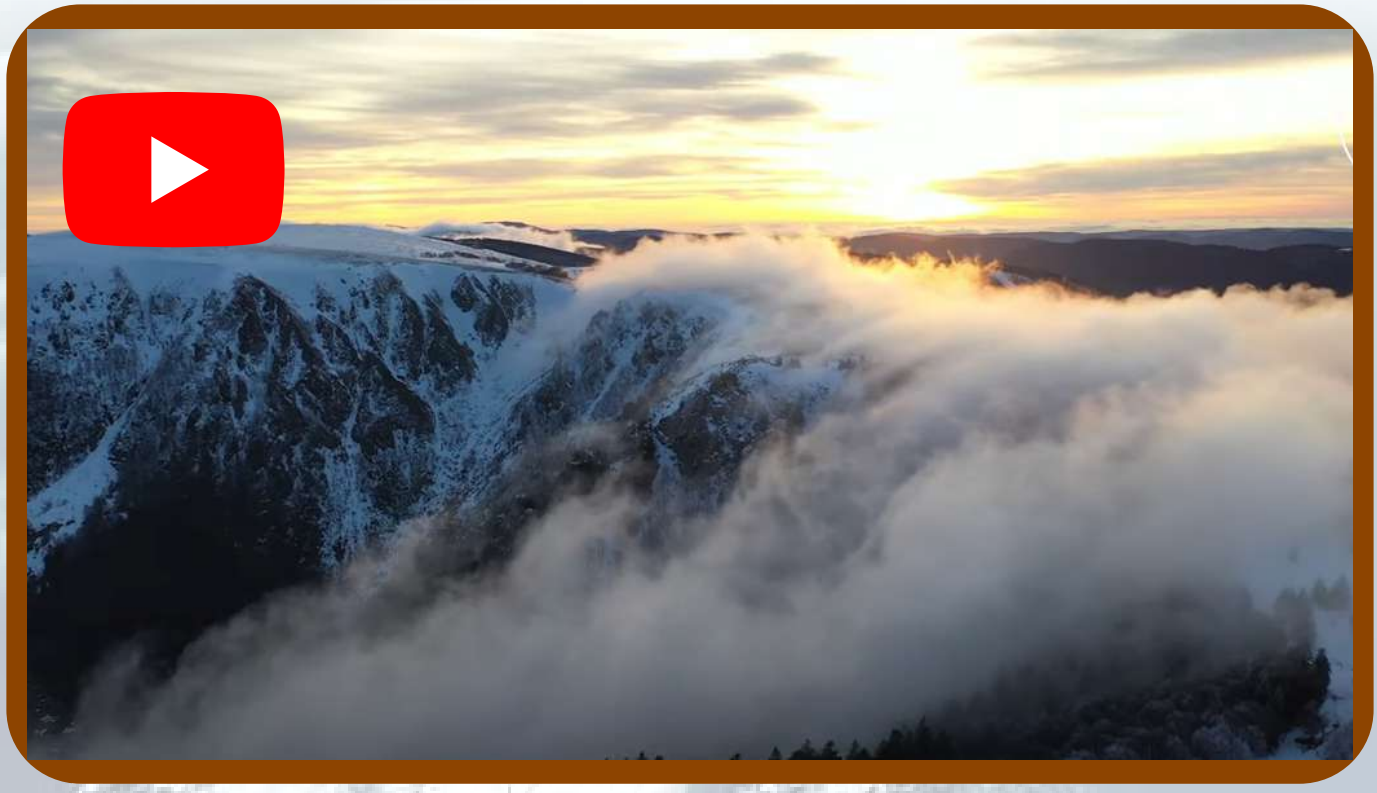

Click the link below to watch the video:

https://youtu.be/0sKCYSvEUM0

4.3

American Journal of Food and Nutrition, 2020, Vol. 8, No. 1, 12-15
Available online at http://pubs.sciepub.com/ajfn/8/1/3
Published by Science and Education Publishing
DOI:10.12691/ajfn-8-1-3

Reviving the Spiritual Roots of Agriculture for Sustainability in Farming and Food Systems: Lessons Learned from Peasant Farming of Uttarakhand Hills in North-western India

Ishwari Singh Bisht[1,*], Jai Chand Rana[2]

[1]Bithoria No.1, Amritashram, Haldwani (Uttarakhand)- 263139, India
[2]The Alliance of Bioversity International (India Centre) and CIAT, C/o NASC Complex, Pusa Campus, New Delhi-110 012, India
*Corresponding author: bisht.ishwari@gmail.com

Received February 10, 2020; Revised March 18, 2020; Accepted March 29, 2020

Abstract The modern industrial agriculture is in crisis. People are questioning the quality, safety and sustainability of our industrial food system. People are also questioning the wisdom of scientific agriculture as science has eventually succeeded in taking the sacred out of farming. However, the crisis brings with it opportunities for decisive, positive change. Based on our recent studies on agri-food system dynamics of traditional small-scale hill farming in Uttarakhand state of north-western India, we could document some community LEK-based innovations that can bring sustainability in food and farming systems. The lessons learned are presented here in this communication that are expected to help create a regenerative farming system mainly by reclaiming the spiritual roots of farming and food systems.

Keywords: *sustainable agriculture, regenerative farming system, spirituality in farming and food systems*

Cite This Article: Ishwari Singh Bisht, and Jai Chand Rana, "Reviving the Spiritual Roots of Agriculture for Sustainability in Farming and Food Systems: Lessons Learned from Peasant Farming of Uttarakhand Hills in North-western India." *American Journal of Food and Nutrition*, vol. 8, no. 1 (2020): 12-15. doi: 10.12691/ajfn-8-1-3.

1. Introduction

Agriculture began independently in different parts of the globe, and included a diverse range of taxa. People around the world, for several millennia, produced food using different methods and systems adapted to their local environments. People grew food in ways that were local, deeply integrated into culture, and tied to the land. Farming shaped festivals, customs, languages, arts, and religions. Farms were embedded in local ecosystems: people produced most of the fertilizers, pesticides, and fuel they needed to run their farms and most food was consumed close to where it was grown. In the last century, however, this has changed dramatically [1].

In the 20th century, a new kind of farming was made possible by using modern methods of agriculture that are technoscientific, economic, and political. They include innovation in agricultural machinery and farming methods, genetic technology, techniques for achieving economies of scale in production, the creation of new markets for consumption, the application of patent protection to genetic information, and global trade. This change made farmers' survival dependent on their ability to sell (rather than eat) their products, and, in many cases, on their ability to secure loans to purchase necessary "inputs" at the beginning of each year.

The conventional industrial agriculture, world over, is in crisis today. The crisis in agriculture has several root causes, but none is more fundamental or more important than is the dehumanizing and desacralizing of the present food and farming systems [2]. The industrial agriculture is dying from lack of respect for life.

The largely small-holder Indian agriculture is also at crossroads under the conventional "green revolution" regime. The national agriculture policies and the agro-input based companies pressured farmers to adopt the new technologies of industrial agriculture, including commercially produced seeds and fertilizers. The sustainability of the present conventional farming and food systems is, however, being greatly questioned. Growing concerns for the sustainability of industrial agriculture have led to a movement that slowly and subtly is reclaiming the sacred in food and farming. The most visible evidence of emergence and growth of this movement has been the growing popularity of organic and locally grown foods [2].

Table 1. Salient features of hill farming agro-ecologies of Uttarakhand state in north-western India

Representative hill agro-ecology	Arable farming landscapes (%)	Subsistence level (local food self-sufficiency, %)	produce and native plant resources to HH cash	State of nutrition transition	External (purchased) inputs used	HH food production and dietary diversity	Incidence of food related non-communicable diseases	State of spirituality in food and farming system	State of Community happiness
1. Crop-livestock small-scale mix farming landscapes (rainfed farming)*	70	80	24	Low	Nil	High	Low	High	High
2. High elevation areas adjoining Tibet with nomadic pastoralist communities (rainfed farming)**	10 -15	60	33	Low to medium	Nil	Moderate	Low to moderate	High	High
3. River valleys practicing improved agriculture (irrigated farming)***	15	100	53	Medium to high	Low to moderate	Low	Moderate to high	Moderate	Moderate

*Data of 10 study sites representing 350 HHs; **Data of 5 study sites representing 100 HHs; ***Data of 5 study sites representing 150 HHs.

2. Salient Features of Hill Farming Agro-ecologies and Food Systems

The traditional farming of Uttarakhand hills in India has its roots in spirituality and these roots needs to be revived to make farming and food systems sustainable. In some of our recent studies, we could document several traditional innovations based on farming communities' local ecological knowledge (LEK). These local innovations have scientific merit that can be easily integrated in to the state agricultural policy for bringing sustainability in food and farming systems [3,4,5,6]. The salient features of hill farming agro-ecologies and agri-food systems are presented in Table 1. The lessons learned are presented here in this communication.

We hope that the lessons learned will address the question we are often confronted with - what would a sustainable or regenerative agriculture system look like, paying attention to its resource base and how it regenerates through natural cycles and closed loops. It is expected that this communication will pave way to generate empirical data, on sound scientific principles, on several of these LEK-based innovations related to farming and food systems. The lessons learned are the outcome of participatory focus group discussion (FGD) meetings involving about 500 farmer households (HHs) from 20 farming landscape sites representing three major hill agro-ecologies (Table 1) during 2018-19.

3. Results

The lessons learned and their relevance to regenerative hill agriculture systems are as follows:

- Spirituality in food and farming has been a way of life in hill farming communities of Uttarakhand since millennia. Farmers prayed for rain, for protection from pestilence, and for bountiful harvests. People gave thanks to God even for their daily meal. There are enough examples of age-old customs of farmer HHs in the community conserving many of the indigenous varieties of crops and wild plant food resources for religious or spiritual purposes. Further, farmers traditionally believe in the old age saying "***you are what you eat***" and duly acknowledge the spirituality aspect to the food that they consume to sustain them physically. Farmers have an understanding that- to be healthy in mind, body and spirit, it is essential to be spiritually connected to the food they eat and to relish the experience of eating. For them the understanding of how to eat is just as important – sometimes even more so – as what to eat. They understand the fact that all food is sacrifice, because all food is gained by death. Traditional farming landscapes and local farming communities, therefore, provide us the opportunity to showcase how indigenous food sovereignty and food systems can contribute for overall health, well-being, and wholesome life of the native communities.
- Except a few river valleys, about 80% hill farming is organic/bio-dynamic/natural or ecological. The small-scale farms relying mostly on resources which were available locally for free. In predominantly traditional crop-livestock mixed farming landscapes, diverse native/naturalized crops are grown as polyculture without using chemical fertilizers and pesticides. Organic farming systems mainly rely on crop rotations, mix-cropping with legumes/pulses, use of forest litter and farmyard manures, aspects of biological pest control, etc. to maintain soil productivity and tilth, to supply plant nutrients and to control weeds and pests. This way safe organic foods are produced for human consumption. These practices intend to help improve human health and preserve the environment for future generations.
- The traditional production landscapes are based on farmers' LEK of 'Analog forestry.' Conventionally it is an approach to ecosystem restoration that considers the process of forest formation and the functioning of forest services to be critical in establishing a sustainable ecosystem characterised by a high biodiversity to biomass ratio. It seeks to optimise the productive potential of the design rather than maximise the production of one crop and to maximise ecosystem services by increasing the

volumetric mass of the photosynthetic component. In the mixed crop–livestock farming system, there exists a dynamic relationship among crops, livestock, CPRs (community agroforestry systems), and forests (community managed). Livestock depend for fodder and grass on CPRs and forest land, and also on crop residues. The CPRs are also source of several wild plant food resources, an important source of HH dietary diversity. In hill farming, to sustain one hectare of farmland, farmers require 6-8 ha of well-managed forests. Therefore, farmlands cannot be seen in isolation in hill farming, and CPRs and forests are integral components of a regenerative farming system and agro-ecosystem restoration.

- The predominantly crop–livestock small-scale mixed farming systems of Uttarakhand hills encourage farmer households to consume more the local crops instead of animal flesh, except for the nomadic pastoralists of high mountainous regions who depend relatively more on animal products. In indigenous animal husbandry of Uttarakhand hills, the livestock are mainly fed on crop by-products while substantive food is mainly reserved for human consumption. Such system saves humans from competing with livestock for food and ensuring food sufficiency. Further, feeding farm animals on crop by-products and forage grasses ensures production of lean meat that helps reduce fat-related complications and diseases.
- Dependence of local communities of Uttarakhand hills on diverse plant resources including wild plants ensures that the plant species are protected, and in this way an effective mechanism of sustainability that indigenous communities can employ to maintain a cosmic balance with the ecosystem.
- A more realistic and often overlooked common practice is - the unique system of crop rotation and keeping the farm land fallow in traditional rainfed hill farming. Keeping the land fallow is a traditional crop rotation practice primarily aimed at fertility and soil-moisture management. The fallow fields during *rabi* (winter) season also serve as grazing ground for cattle and goats. The excreta of these animals dropped during grazing add organic matter to the soil. This organic matter increases soil fertility.
- In the traditional small-holder farming systems, the crop production and consumption decisions of farmer households are often linked. The consumption preferences continue to influence these decisions. The surplus crop produce is sold locally in the community, sometime through bartering. Profit maximization has never been the production objectives of the farmer households and market prices are a small fraction of the private incentive that farmer attach to maintaining crop diversity. Cultural and consumption preferences, therefore, play a major role in decision making of farmer households. Maintaining crop landrace diversity in production systems also has public incentives to farmers and society. Genetic diversity in crop landrace populations has substantially contributed for adaptive response to changing climate and also has potential to generate novel variations needed to maintain the capacity of crops to adapt to change. The traditional farming systems thus provide an evolutionary service to the society.
- Livestock in traditional hill farming contribute substantially to rural livelihoods, employment, and poverty relief. They integrate with and complement crop production, embody savings, and provide a reserve against risks. While crops provide feed and fodder, livestock provide meat, milk, and milk products for subsistence and as a source of cash income. Livestock also supply draught power to till the land and provide power for other agricultural operations such as threshing and transport. Livestock therefore are integral to the sustainability of the farming communities in Uttarakhand hills.
- The important tradition of harvesting regulations/restrictions commonly practiced in local farming communities/food cultures of Uttarakhand hills also ensures sustainability and helps control human desires which is considered an important learning in environmental education.

4. Discussion

The traditional hill farming in Uttarakhand state of India represents a system truly in harmony with nature, relying on concepts of nurturing rather than dominating or manipulating nature. As we reconnect with the spiritual roots of food and farming, it changes the way we farm and live. We learn to pursue peace and happiness rather than success. We seek harmony among things economic, social, and spiritual, not maximums or minimums. A life of quality is a shared life. A life of quality is a spiritual life. Hill agriculture is ecologically sound, socially responsible and economically viable over time. It is deeply rooted in harmony with the higher order of things, in spirituality.

At global level, giant corporations have taken control of our food. Today, just a few companies control what we eat and how it is produced. For them, food is money: companies and their shareholders aren't interested in what food means to the people who grow and eat it, or what farming means for the environment. They are interested in the profits they can make from it. We need a kind of food system that recognizes the value of people, respects the planet, and provides decent, dignified work (1). The present crisis in global farming and food system therefore brings with it opportunities for decisive, positive change [2]. Concerns for sustainability in food and farming systems are therefore ultimately rooted in philosophy and spirituality that the hill farming of Uttarakhand showcases.

Acknowledgements

We thank the farming households of Uttarakhand hills for effectively interacting and sharing the valuable information they possess on traditional farming and food system across different hill agro-ecologies. Need-based funding support for conducting FGD meetings was available under the UN Environment Implemented GEF project titled "Mainstreaming agricultural biodiversity

ration and utilization in agricultural sector to ensure ecosystem services and reduce vulnerability in India" presently being jointly operated by Bioversity International (India Centre) and Indian Council of Agricultural Research (ICAR).

Disclosure Statement

No potential conflict of interest is involved.

References

[1] Sandwell, K., Growing power: Mega-mergers and the fight of our food systems, Published by Transnational Institute, January, 2019.

[2] Ikerd, J.E., Agriculture and Spirituality. In: Zsolnai, L. and Flanagan, B. (ed) The Routledge International Handbook of Spirituality in Society and the Professions, Routledge, 2019.

[3] Bisht, I.S., Mehta, P.S., Negi, K.S., Verma, S.K., Tyagi, R.K. and Garkoti, S.C., Farmers' rights, local food systems and sustainable household dietary diversification: A case of Uttarakhand Himalaya in north-western India. *Agroecology and Sustainable Food Systems* 42: 73-113, 2018.

[4] Bisht, I.S., Agri-food system dynamics of small-holder hill farming communities of Uttarakhand in north-western India: Socio-economic and policy considerations for sustainable development. *Agroecology and Sustainable Food Systems,* 2019. (Submitted).

[5] Bisht, I.S., Globalization of food choices negatively impacting sustainability of traditional food systems: A case of Uttarakhand hills in north-western India. *American Journal of Food and Nutrition* 7: 94-106, 2019.

[6] Bisht, I.S., Local Food and Healthy Eating for Wholesome Life: Some Policy Considerations. In: S. Hashmi, I.A. Choudhury (eds.). *Encyclopaedia of Renewable and Sustainable Materials,* 5, pp. 422-430, 2020. Oxford: Elsevier.

© The Author(s) 2020. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

Source - https://scholar.google.com/scholarhl=en&as_sdt=0%2C5&q=uttarakhand+spiritual&btnG=#d=gs_qabs&t=1652494263766&u=%23p%3DNKvTxAYA2AAJ

4.4

लेख 1

एक लोक-नदी — केदारखण्ड में गंगा

पुराण साहित्य के जानकार *केदारखण्ड* ग्रन्थ को *स्कन्द पुराण* का हिस्सा मानते हैं। संस्कृत भाषा के ग्रन्थ *केदारखण्ड* में मुख्य रूप से हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र व गंगा के स्रोत प्रदेश का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। भूगोल के साथ-साथ यहाँ के तीर्थ-स्थलों की स्थिति व महत्त्व को भी बताया गया है। केदारखण्ड गढ़वाल का पौराणिक नाम भी है, "केदार" का अर्थ शिव के रूप में भी लिया जाता है और इसी आधार पर गढ़वाल को शिव की भूमि भी कहा जाता है। सभी (पञ्च) केदार इसी भूमि में स्थित हैं।

गंगा का स्रोत प्रदेश गढ़वाल ही है। गंगा की मुख्य धारा भागीरथी के उद्गम सहित उन सभी धाराओं का उद्गम और मिलन (पञ्च प्रयाग) भी यहीं होता है, जिनसे मिलकर गंगा का स्वरूप पूर्ण होता है। केदारखण्ड में गंगा की दस धाराएं बताई गई हैं। भागीरथी के देवप्रयाग पहुँचने तक ये सब मिल चुकी होती हैं।

केदारखण्ड के अध्याय 39, श्लोक 40 व 41 में राजा भगीरथ से यमुना का परिचय कराते हुए गंगा कहती है –

यमुनेति समाख्याता सर्वकल्मषनाशिनी।
दसाधाहं महाराज निःसरामि हिमालयात्॥
ज्येष्ठा श्रेष्ठतरा धारा त्वया सह गमिश्यति।
पुनर्न्यास्तु या धाराः संगमेश्यति मे पुनः॥

अर्थात् यह यमुना है । मैं हिमालय से दस धाराओं में निकलती हूँ। ज्येष्ठ धारा तुम्हारे साथ जाएगी, अन्य धाराएं मेरे साथ जाएंगी और संगम में पुनः मिल जाएंगी ।

केदारखण्ड ग्रन्थ में शिव के साथ पार्वती व गंगा की वृहद् कथा बताई गई है । गंगा के स्वरूप के अनुरूप उसके एक हजार नामों (सहस्रनामा) से सम्बोधन भी इस ग्रन्थ में मिलता है । कथा यह है कि राजा भगीरथ ने निर्विघ्न गंगा के प्रवाह के लिए हजार नामों से गंगा की स्तुति की थी ।

केदारखण्ड ग्रन्थ के कुल 206 अध्यायों में से 10 अध्यायों में गंगा की कथा बताई गई है। गंगा (सभी धाराओं) के अवतरण से लेकर उसके तीर्थ व महत्त्व का विस्तारपूर्वक वर्णन है। हालांकि पूरी कथा पौराणिक है, तथापि संस्कृत श्लोकों में बताई गई कथा गंगा के लोक स्वरूप को भी बताती है। गंगा की इतनी विस्तारित महिमा किसी अन्य ग्रन्थ या साहित्य में शायद ही मिलती हो।

पुराण साहित्य में केदारखण्ड की स्थिति –

महापुराण 18

लघु पुराण 36

18 महापुराण में से एक है *स्कन्द पुराण*

स्कन्द पुराण के सात खण्ड हैं

सात खण्डों में से एक है माहेश्वर

माहेश्वर के तीन खण्डों में से एक है *केदारखण्ड*।

केदारखण्ड के अध्याय 2 में गंगा की उत्पत्ति की कथा है। पहले व दूसरे श्लोक में कहा गया है कि "गंगाजल" धरती पर "ब्रह्म" रूप में होने से पवित्र है। धरती पर अवतरित होने अर्थात् "गां गता" से गंगा नाम पड़ा। धरती पर गंगाजल पवित्र है, यह शास्त्र अर्थात् पुराण कथा के समान ही वृहद् भारतीय लोक में भी मान्यता है। इस कारण लोग घरों में गंगाजल रखते हैं और पर्व अवसरों पर घरों में छिड़काव करते हैं।

अध्याय 2, श्लोक 1 व 2 –

तदेतत्परमम् ब्रह्म द्रवरूप महेश्वरि।
गंगाख्यं यत्पुण्यतं पृथिव्यामागतं ।।
गां गतेति ततो गंगा नाम तस्या बभूव ह ।।

लोक में गंगा का मुक्तिदाता रूप भी *केदारखण्ड* की कथा के अनुरूप है। जिस तरह से राजा भगीरथ अपने पितरों की मुक्ति के लिए ब्रह्मा से गंगा प्रदान करने का निवेदन करते हैं, उसी तरह वृहद् हिन्दू समाज में गंगा के तट पर अन्तिम संस्कार व अस्थि-विसर्जन की मान्यता है।

अध्याय 30, श्लोक 20 –

वरं ददासि चेन्मह्यं वरयोग्योस्म्यहं यदि।
गंगायाः सम्प्रदानं मे पितृऋणां मुक्तये कुरू ।।

इसी तरह अध्याय 33, श्लोक 2 में कहा गया है कि श्रेष्ठ कार्यों की सफलता में अवरोध आते ही हैं। गंगा को धरती पर लाने के कार्य में भी आएंगे, इसलिए भगीरथ ऐसा संकल्प लेकर ही हिमालय में तप के लिए जाएं। विभिन्न लोक समाजों में आज भी यह मान्यता है कि सभी श्रेष्ठ कार्यों के मार्ग में कठिनाईयां आती हैं।

अध्याय 33 श्लोक 2 –

विघ्नान्यपि भविष्यन्ति श्रीगंगा नयने ध्रुवम्।
प्रायः श्रेयस्सु कार्येषु भविष्यन्ति न संशयः ।।

लोक समाज और यहाँ तक कि भारतीय भाषओं के साहित्य में भी सबसे कठिन प्रयासों को "भगीरथ प्रयास" कहा जाता है। लोक में यह मान्यता भगीरथ द्वारा कठिन तप से गंगा को धरती पर लाने से ही जुड़ी हुई है। *केदारखण्ड* को देखें तो भगीरथ को न केवल तीनों देवों को प्रसन्न करना पड़ा बल्कि अवतरण के बाद भी निर्विघ्न व निरन्तर प्रवाह के लिए स्रोत प्रदेश के निवासियों गंधर्व व असुरों से युद्ध व नागों की स्तुति करनी पड़ी। ये लोग गंगा को ले जाने नहीं दे रहे थे। दरअसल नागों से भयभीत होकर ही भगीरथ ने गंगा सहस्रनाम की स्तुति की थी। स्वयं गंगा ने भी नागराज वासुकी की स्तुति की और भगीरथ राजा के साथ जाने के लिए यह कहते हुए छोड़ देने का निवेदन किया कि "मेरी मति और गति समुद्र में लग गई है" (अध्याय 39, श्लोक 22 से 28 तक) राज भगीरथ को जह्नु ऋषि को भी प्रसन्न करना पड़ा, जो गंगा द्वारा कुश कण्डिका बहा ले जाने से क्रुद्ध होकर गंगा को आचमन कर पी गए थे।

गंगा देवी (ब्रह्मरूप) में अलौकिक शक्ति है लेकिन धरती पर प्रत्यक्ष अर्थात् भौतिक रूप में बहती है। इस तरह वह प्रत्यक्ष देव है। गंगा के मन्दिर व मूर्तियां भी बनी हैं और पूजी जाती हैं, लेकिन बहती नदी के तट पर खड़े होकर दर्शन और पूजन का भी शास्त्र व लोक में समान महत्त्व है। लोक में अन्य नदियों का सम्मान भी गंगा नाम से ही होता है। और गंगा के कारण ही अन्य तमाम नदियां पूजनीय होती हैं। लोक में निकट की छोटी-बड़ी नदियों को भी प्रायः गंगाजी नाम से पुकारा जाता है। यह मान्यता भी *केदारखण्ड* की उस कथा के समान है जिसके अनुसार गंगा का स्वरूप उसकी सभी धाराओं के पुनः भागीरथी के साथ मिल जाने पर ही पूर्ण होता है।

गंगा का पूजा-विधान लोककीर्तन भी है। गंगा देवी तो है, साथ ही शिव-पत्नी होने से वह लोक की माता है। गंधर्व, असुर, नाग, सभी की माता है, क्योंकि सबका पोषण करती है। गंधर्व, असुर, नाग आदि पौराणिक समय में गंगा के स्रोत प्रदेश के निवासी रहे हैं। लोक में गंगा के लिए गंगा माता, गंगा मैया, गंगा माई, गंगा माँ, गंगाजी जैसे सम्बोधन हैं।

पुराण साहित्य व कर्मकाण्ड में भले ही गंगा मुक्तिदाता व मोक्षदाता मानी जाती हो, लेकिन *केदारखण्ड* में भगीरथ के मुँह से निकला गंगा सहस्रनाम, जिसे उससे पूर्व केवल शिव ही जानते थे, में बताए गए अनेक नाम, गंगा के वृहद् लोक-स्वरूप को भी बताते हैं। अध्याय 38 के 150 श्लोकों में ये नाम बताए गए हैं।

केदारखण्ड के अनुसार गंगा धारण करती है –

लोक धारिणी
स्वर्णकण धारिणी
वृक्ष-वस्त्र धारिणी
श्वेत-वस्त्र धारिणी
जीव-जन्तु धारिणी
सब नक्षत्र धारिणी
पुण्य नक्षत्र धारिणी
परब्रह्म धारिणी
तीर्थराज धारिणी

गंगा लोक को प्रदान करती है –

सर्व-वर दायिनी
सुख-सम्पत्ति दायिनी
मातृ-भक्ति दायिनी
पितृ-भक्ति दायिनी
बसन्त-उत्सव दायिनी
निर्मल-जल दायिनी
अनन्त-जल दायिनी

गंगा निवास करती है –
नन्दन वन वासिनी
नन्दन पर्वत वासिनी
सुमेरु पर्वत वासिनी
कैलाश पर्वत वासिनी
देव तीर्थ वासिनी
भृगु पर्वत वासिनी
श्रीकण्ठ वासिनी
महावलय वासिनी
मैनाक पर्वत वासिनी
जम्बूद्वीप वासिनी

(सुमेरु, कैलास, भृगु, श्रीकण्ठ व मैनाक हिमालय के शिखर हैं। महावलय सम्पूर्ण हिमालय का ही नाम है।)

भैरवी भीषणवरा भृगुतुंगनिवासिनी।
केदारशिखरावासा महावलयवासिनी॥
– *केदारखण्ड*, अध्याय 38, श्लोक 40

5 Epilogue

5.1

Song No. 49

गंगा हिमालय

हिमालय बोनु छ मैतैं यनुं न बिगाड़ा
अपडा कर्मू तैं तुम कुछ त सुधारा, हे मनखी तुम कुछ त सुधारा।
हिमालय मां ग्लेशियर पिघलिगे सारू कख मिललू मनखी तैं गंगा कु किनारू
ग्लेशियर नष्ट करली अपड़ा पापन शिवजी बाबा भागी जालू स्वर्ग बिटीन
शिव बोदू हे भगतों यनु धयान राखा हिमालय मेरा माथा कु मुकुट
हिमालय बोनु छ मैतैं यनुं न बिगाड़ा अपडा कर्मू तैं तुम कुछ त सुधारा।
हिमालय बोनु छ यूं पेड़ पौध न काटा भूस्खलन होलु तब तुम कख जाला
हिमालय बोनु छ डाम यनु न बणाव देव भूमि चार धाम यनू न बिगाड़ा
हिमालय बोनु छ मैतैं यनुं बिगाड़ा, अपडा कर्मू तैं तुम कुछ त सुधारा।
भूस्खलन आई जब सुद न पाई बेटी ब्वारी कैनी, नातीनौन गंवाई
हिमालय बोनु छ यनी आग न लगावा उत्तराखण्ड की माटी तुम सपा न बगावा
हिमालय बोनु छ मैतैं यनुं न बिगाड़ा, अपडा कर्मू तैं तुम कुछ त सुधारा।
फूके जाली पंछी जीब डाली बूटी, धार पाड़ सब खाली वही जाला

Song No. 49: *Ganga Himalaya*

Says the Himalaya
Deface me not
On your doings, Man, deliberate
Some at least, if not a lot ...

Lofty glaciers, all but melting
Chipped away by the greedy saw
Shiva's silver crown a-falling
Ganga's home in speedy thaw

Where will you find her, Man?
When she is gone?
O devourer of treasures!
Of paradise, of Shiva anon

Where will you search for them?
When trees fall, how will you rise?
When under feet land will slide
Take you by surprise, where, then,
Will you abide?

How will you count losses, Man?
When child, wife and elder depart
When the soil of your land
Is no more, ripped apart

How will you gather it back again?
When song of the bird,
Fruit on the tree, the blade of grass
Breath of your life, perish unheard?

Arrested for killing your own
Who will come to your defence?
Reaper of a terrible seed sown
A life of consternation, non-sense

(For Original Version, see Song No. 49, Appendix I)

5.2 Veteran conservationist and Ganga crusader, Swami Gyanswaroop Sanand dies during fast-unto-death to save Ganga

Written By: Barkha Mathur, **Edited By: Sonia Bhaskar**

The 86 year old former Indian Institute of Technology, Kanpur professor, Gurudas Agarwal also known as Sant Swami Gyan Swaroop Sanand, who was on a fast unto death since June 22 to put pressure on the government to take some concrete steps to clean up Ganga, died after a heart attack at All India Institute of Medical Sciences (AIIMS) at Rishikesh, Uttarakhand on Thursday.

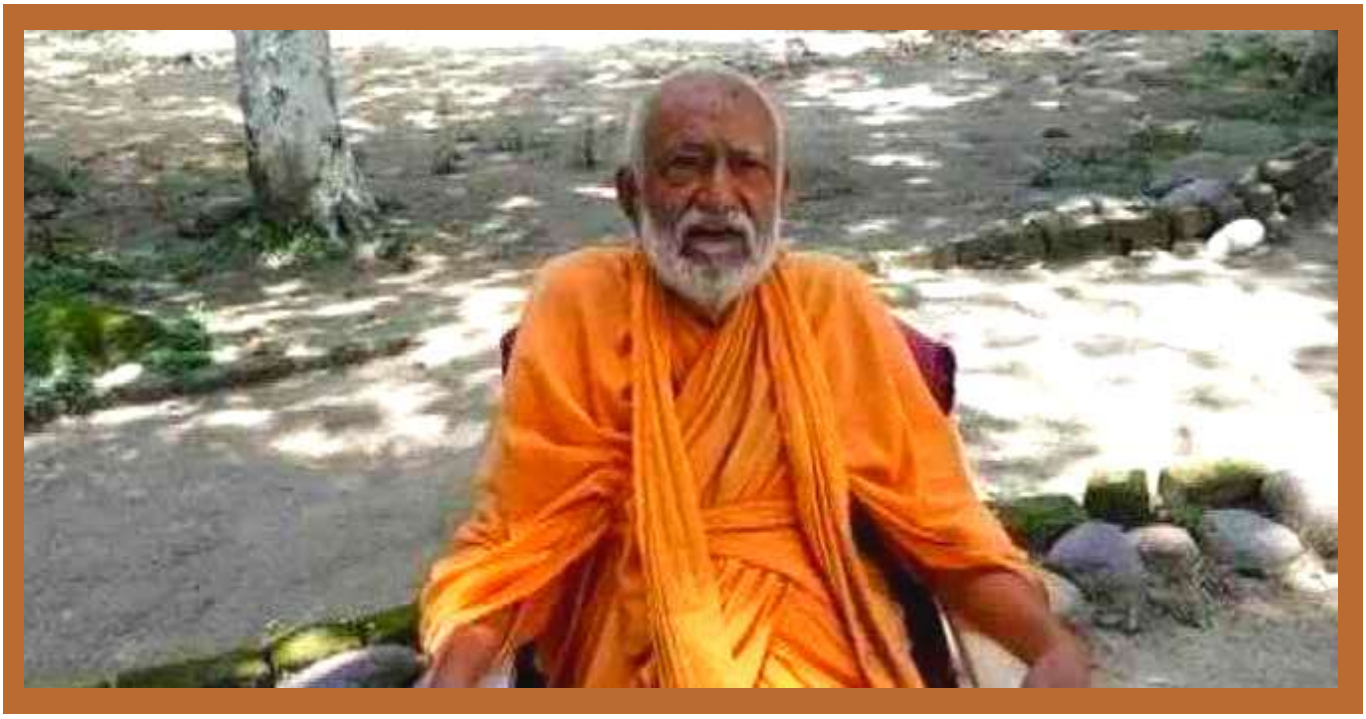

New Delhi: The 86-year-old former Indian Institute of Technology, Kanpur professor, Gurudas Agarwal also known as Sant Swami Gyan Swaroop Sanand, died after a heart attack at All India Institute of Medical Sciences (AIIMS) at Rishikesh, Uttarakhand on Thursday. He had been on a fast unto death since June 22 to put pressure on the government to take some concrete steps to clean up Ganga. During his 111 days fast he demanded government measures for a pollution-free and uninterrupted flow in the Ganga in its natural form. He was admitted to the hospital on Wednesday after he even gave up water. Dr Ravi Kant, Director AIIMS, Rishikesh said, “GD Agarwal suffered from hernia, high blood pressure and coronary artery disease and the fast worsened his condition.”

Mr. GD Agarwal, who taught at IIT-Kanpur for 17 years, was the Patron of an NGO named the Ganga Mahasabha founded by Madan Mohan Malviya in 1905 and also served as the first member-secretary on the Central Pollution Control Board. Mr. Agarwal had protested against hydroelectric projects on the Ganga's tributaries and had demanded a law to protect the river.

Union Water Resources and Ganga River Rejuvenation Minister Nitin Gadkari termed GD Agarwal's death 'an irreparable loss to the nation'. The former environment minister said, "He was an indefatigable crusader not only for Nirmal Ganga (unpolluted Ganga) but also for Aviral Ganga (free-flowing Ganga). It was my privilege and good fortune to be able to implement some of his important suggestions to ensure uninterrupted flow in the Ganga and its tributaries in Uttarakhand".

Reacting to the demise of the Ganga crusader, Prime Minister Narendra Modi said his passion for saving the environment will always be remembered. "Saddened by the demise of Shri GD Agarwal Ji. His passion towards learning, education, saving the environment, particularly Ganga cleaning will always be remembered. My condolences," he tweeted.

Sunita Narain, Director of Centre for Science and Environment (CSE) called environmentalist Agarwal a phenomenal scientist who was one of those who started fight against pollution in India and was passionate and committed to Ganga.

Describing Mr. Agarwal as "the true son of mother Ganga", Congress leader Rahul Gandhi said he gave away his life to save the river. "Saving the Ganga is like saving the country. We will never forget him and will take his fight forward," Mr. Gandhi said on Twitter.

Inputs from Press Trust of India

Source - Veteran Conservationist And Ganga Crusader, Swami Gyanswaroop Sanand Dies During Fast-Unto-Death To Save Ganga | News (ndtv.com)

Follow us:
Website: https://rgfindia.org/
FB: @rgf
YouTube: @RGF